॥ श्रीजानकीवल्लभो विजयतेतराम् ॥

श्री

रत्नमाल चिन्तामणि

(चिन्तनीय अनमोल रत्न - इच्छा फल प्रदायक)

भक्ति, नीति, वैदिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान के शैक्षणिक प्रश्नोत्तर सहित

उत्तम शिक्षा दोहावली

स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'

Scanned with Cam

पूज्यपाद **तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी 'अच्युत'**

श्रीमहन्त - उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ), कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-६

प्रस्तुत प्रकाशन के प्रश्नोत्तर भाव-प्रस्फुटित काव्य में मेरी किशोरावस्था अर्थात् १९ वर्षीय बाल आयु की रचना समय का प्रयास है, वह कहां तक सफल [illegible] है, यह निर्णय विद्वत् मण्डल-पाठकों के समक्ष है।

तीन सौ दोहों में छः सौ प्रश्नों के छः सौ उत्तर तथा एक सौ दोहों में चार सौ सूत्र रूप शिक्षा-वाक्य वस्तुतः कण्ठस्थ करने में संक्षिप्त, सुलभ एवं योग्य हैं। दोहा जैसे छोटे दो लाईन के कलेवर में बहुत कुछ सामग्री का चयन किया है। कतिपय उपदेश प्रश्न? उत्तर शब्दों का पुनरावर्तन हुआ है, जो वेदान्त-ज्ञान के षड्लिंगों में अभ्यास-पठन की पूर्ति मानकर पाठक के बोद्ध-भाव को दृढतर गुरु स्मरण करवाया है। अन्त में २०० उपदेश बोल भी दिये हैं।

Scanned with Cam

ॐ

॥ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ॥

रत्नमाल चिन्तामणि

(चिन्तनीय अनमोल रत्न - इच्छा फल प्रदायक)

भक्ति, नीति, वैदिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान के शैक्षणिक प्रश्नोत्तर सहित
उत्तम शिक्षा दोहावली

लेखक :

श्री वैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी जोधपुर के आद्यपीठाधीश्वर अनन्त श्री स्वामी हरिरामजी वैरागी की शिष्यानुगत परम्परा में श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमराम जी महाराज के कृपापात्र शताधिक्य सत्साहित्यक ग्रन्थों के रचयिता, यशस्वी टीकाकार, सम्पादक एवं लेखक

तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्रीमहन्त - उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ), जोधपुर

उत्तम प्रकाशन, जोधपुर-३४२००६

Scanned with Cam

❖ प्रकाशक :

वास्ते उत्तम प्रकाशन जोधपुर

हुकमाराम दुर्गाराम सुथार (जोपिंग)

V.P.O. झाबरा, तहसील पोकरण

जिला जैसलमेर-345024

मो.9890877770

❖ ISBN : **978-81-88138-66-1**

❖ © उत्तमप्रकाशनाधीन

❖ **द्वितीय संस्करण : २०१८ ई०** **विक्रम संवत् २०७५**

❖ **सेवा** : २५ (पच्चीस रुपये मात्र)

❖ लेजर टाइपसेटिंग
उत्तम कम्प्यूटर
जोधपुर.

मुद्रक :
हिंगलाज ऑफसेट प्रिंटर्स
जोधपुर

RATNAMAL CHINTAMANI

Written by : Swami Ramprakashachaya Ji Maharaj

Publisher : Uttam Ashram (Acharya Peeth), Jodhpur-342 006. G 0291-2547024

Second Edition : 2018 **Price Rs. : 25.00**

उत्तम शब्द मय चिन्तामणि की चयनित मणि रूप रत्नों की माला षट शास्त्र सार सिद्धान्त सन्त वाणी के रहस्य की प्रस्तुत रचना किशोरावस्था के पड़ाव उन्नीस वर्षीय बाल आयु (दीक्षायु) का रोचक प्रयास है।

तीन सौ दोहों में छः सौ प्रश्नों के छः सौ उत्तर रत्न यथा एक सौ दोहों में चार दोहों में सूत्र रूप रत्न शिक्षा वाक्यों का संकलन है, जो कण्ठस्थ करने में सुलभ ज्ञान एवं सुयोग्य है।

दोहे जैसे छोटे से दो लाईन के कलेवर में बहुत कुछ रहस्यमय चिन्तामणि रत्न सामग्री का चयन आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिये अनुपम उपयोगी है। कतिपय उपदेश प्रश्नोत्तर शब्दों का पुनरावर्तन वेदान्त सिद्धान्त के अभ्यास लिङ्ग की प्रस्तुति है। अन्त में द्विशताधिक्य उपदेश रत्न वाक्यों का प्रबोध भी प्रबुध मनीषी पाठकों के लाभ की अलभ्य वाणी है।

प्रस्तुत 'रत्नमाल चिन्तामणि' की प्रथमाकृति वि.सं. 2038 (1981 ई.) में उतम साहित्य निधि द्वारा भक्तों की प्रेरणा से प्रकाशित हुई थी, वैसे ही प्रस्तुत द्वितीयावृत्ति का प्रकाशन दिया गया है।

पुराणामित्येव न साधु सर्वे न चापि नूनं नव मित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यन्तर भ्वजन्ते मूढः पर प्रत्ययनेय बुद्धिः।।

– नीति दर्पण

अर्थात पुराणा सभी अच्छा नहीं होता और नवीनत सभी बुरा नहीं होता। सत पुरुष परीक्षा करने के बाद ग्रहण करते है और मुर्ख दूसरों

Scanned with Cam

का कहा हुआ मान लेते है।

यथा–

भ्रमर पुष्पन मधुर रस ले, चयन करे मधु सज्जन भावे।
मक्षिका व्रण सड़ान की गन्द को, चयन करे गति ताहि सुहावे।।
ऐसे ही सज्जन सद्गुण चयनित, जीवन लाभ को श्रेष्ठ चुनावे।
दुर्जन छिद्रान्वेषण खोजत, रामप्रकाश ना बोध को पावे।।
बिगरो देत सुधार जे, ते सज्जन मति धीर।
नुगुणा जन अशुद्धि पढ़े ते मति हास्य पीर।

व्याधि ग्रस्त वयोवृद्धावथा में मानवीय दोषों में वर्तनी टंकण एवं तकनीकी अशुद्धियों कर्णापाटव पीड़न को प्रबुद्ध मनीषी सुधार कर देवत्व का परिचय देते बौद्धिक लाभ उठायेंगे। इत्योम्

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ)
गुरु पूर्णिमा, 2075
जोधपुर –6

विश्व हितेषु
स्वामी रामप्रकाशाचार्य 'अच्युत'
(स्वाधीष्ठाता)

विषयानुक्रमणिका

Scanned with Cam

ॐ

श्री हरि गुण सच्चिदानन्दाय नमः

स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज कृत

श्री रत्नमाल चिंतामणी

प्रश्नोत्तरावली–प्रथम माला

दोहा–छन्द

श्री हरि गुरु संत रामजी, नमो निरंजन राम ।
''रामप्रकाश'' वन्दन करे, संशय कटे तमाम ॥ 1 ॥

ब्रह्मवेता ब्रह्मरूप हो, सतगुरु उत्तमराम ।
''रामप्रकाश'' वन्दन करे, कीजे पूरण काम ॥2॥

हरि हर सृष्टा ब्रह्म स्वयं, घट घट व्यापक एक ।
''रामप्रकाश'' वन्दन किये, उपजे ज्ञान विवेक ॥3॥

सतगुरु दीन दयाल हो, संशय छेदनहार ।
भ्रम–भ्रांन्ति–भेद हर, कीजे आनन्दकार ॥4॥

शरण पड़ा मैं दीन हूँ, कृपा करो गुरुदेव ।
उर में शंका होत है, दीजे उत्तर भेव ॥5॥

सतगुरु उत्तमराम को, करत दास प्रणाम ।
''रामप्रकाश'' के द्वैत को, काटो संशय तमाम ॥6॥

Scanned with Cam

"उत्तमराम" गुरु आप हो, संशय मेटनहार ।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, पूरण ब्रह्म अपार ॥7॥
बलिहारी बलिहार में , वार-वार बलिहार ।
देने को कहा लोक में, सब के गुरु दातार ॥8॥
तन मन धन सब चरण में, न्योछावर गुरुदेव ।
संशय काट्यो भ्रम को, दियो ज्ञान को भेव ॥9॥
इच्छा थी हरि मिलन की, सो घट दीयो लखाय ।
प्रश्न-उत्तर कर लोक में, संशय दिये भगाय ॥10॥
तीन लोक त्रियकाल गुण, सम्पत्ति भव की नेक ।
सो गुरु की प्रसाद कर, रामप्रकाश विवेक ॥11॥
सतगुरु के उपकार को,, कैसे लिखूं बनाय ।
श्याममुख जड़ लेखनी, मति अल्प विकलाय ॥12॥
सतगुरु साहिब ज्ञान घन, सब ही निपट अयान ।
दुःख भञ्जन सुख रूप हो, पूर्ण कृपा निधान ॥13॥
प्रतिपालक चालक तुम्ही, तुम ही दाता राम ।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, वार-वार प्रणाम ॥14॥
मैं क्रोधी कामी कुटिल, नीच विद्या बल हीन ।
मया करी गुरुदेवजी, अपनायो लख दीन ॥15॥
वैदिक लौकिक लाज तज, भया फकर मस्तान ।
दुनिया लखे न युक्ति को, कैसे हो कल्यान ॥16॥
गुरुदेव की शरण में , मिटी हृदय की पीर ।
जग नाता तज देह का, निश्चल भया फकीर ॥17॥

Scanned with Cam

जाय शरण गुरुदेव के, प्रश्न ? किया विचार ।
उत्तर दाता सतगुरु, ज्ञान दिया ततसार ॥18॥
धन्य सुमति जिज्ञासता, शिष्य शुद्ध चित आय ।
उत्तम लख अधिकारि को, रहस्य दियो लखाय ॥19॥

श्री सतगुरु वचन

अहो शिष्य वरणों भली, शंका–प्रश्न ? मत कोय ।
यथा–विधि गम उत्तर दे, समझवों में तोय ॥20॥

प्रश्न ? उत्तर

सुख का हेतु कौन है ? निज धर्म परम प्रधान ।
आनन्द की हद कौन है ? पारब्रह्म परमान ॥21॥
स्वच्छ बुद्धि कैसे बने ? ब्रह्मचर्य संगत धार ।
ब्रह्मचारी का धर्म क्या ? सत आचरण विचार ॥22॥
स्वाध्याय से लाभ क्या ? उतम ज्ञान विचार ।
मन शुद्धि को हेतु क्या ? कर निष्काम आचार ॥23॥
साधु को कहा उचित है ? त्याग सदा अहंकार ।
गृहस्थी को कर्त्तव्य कहो ? हवन दान दया धार ॥24॥
वान प्रस्थी का तप कहा ? इन्द्रिय दमन संचार ।
मानव धर्म के अंग क्या ? सत्य क्षमादि आचार ॥25॥
धर्म सहकारी कौन निज ? घृति अहिंसा जान ।
धर्म प्रतिबन्धक कहो ? गुण को गर्व महान ॥26॥
धर्म पतन जग कौन है? दूराचारी नर–नार ।
उन्नति होन को मूल क्या ? दुर्व्यशन सब टार ॥27॥

Scanned with Cam

दुर्व्यशन कहो कौन यह ? मद्य जुआदि कुचाल ।
मृत्यु तुल्य व्यवहार क्या ? निज अपयश को भाल ।।28।।
ब्राह्मण कौन या जगत में ? सात्विक तपी विद्वान ।
क्षत्रिय कौन है जगत में ? वीर धीर दम दान ।।29।।
वैश्य कौन है जगत में ? सत्य करे व्यापार ।
शूद्र कौन है जगत में ? कर्तव्य रत सू आचार ।।30।।
पक्षपात का हेतु क्या ? अल्प अज्ञता ज्ञान ।
साधन में त्रुटि कहा ? भोगेच्छा बलवान ।।31।।
सदा काल क्या काम हो ? निज कर्तव्य ज्ञान
कौन कर्तव्य श्रेष्ठ नर ? पर उपकार महान ।।32 ।।
मन मलीन कैसे भया ? अशुभ भाव अज्ञान ।
विघ्नापति का हेतु क्या ? नीच विचार प्रधान।।33।।
मरण काल साथी कहो ? राम रु काम विचार ।
जीते मृतक कौन जग ? आलस लीन आचार ।।34 ।।
अति दरिद्र कौन जग ? तृष्णालू जन जान ।
अधम कौन या जगत में ? दुष्ट आचरण बखान ।।35 ।।
प्रारब्ध फल कौन है ? सुख दुःख आदि विचार ।
बहिरा है अति कौन जग ? सुने न प्रेम संचार ।।36।।
छोटेपन को हेतु क्या ? याचन करन लबार ।
दोषों का कारण कहा ? धन विद्रोह अविचार ।।37।।
पशु तुल्य को जगत में ? जो गुणहीन पुमान ।
अग्नि सम दाहक कहो ? द्वैष क्रोध मद मान ।।38 ।।

Scanned with Cam

बहुपन को हेतु क्या ? तृष्णा ईर्षा ज्ञान ।
अधम कौन नर सृष्टि में ? देह ममता अभिमान ।।39।।
जन सुधार कैसे बने ? सत यत्नों से होय ।
प्रातः शायं क्रिया कहा ? ध्यान प्रभु को जोय ।।40 ।।
आनन्दवत को जगत में ? सर्व हितैषी जान ।
सभ्य भाव कैसे बने ? सत्य भाव दम दान ।।41।।
मन शुद्धता कैसे बने ? कर निष्काम आचार ।
जग कीर्ति कैसे फले ? वृत्ति ज्ञान उदार ।।42 ।।
दुःख का कारण कौन है ? तृष्णा अधिक प्रधान ।
वाणी पवित्र कौन विधि ? सत्य भाषण प्रिय ज्ञान।।43।।
विद्या निष्फल होत कब ? धारण बिन अभ्यास ।
सचक्षु अंध कौन है ? काम पीड़ित दुःख रास ।।44 ।।
दुःखदाई जग कौन है ? दुर्वासन धन जान ।
उग्र पातकी कौन है ? आतम घाती मान ।।45।।
राज्य नष्ट कैसे बने ? कुमंत्रिन अन्याय ।
भक्ति में बाधक कहो ? विषयाऽशक्ति गाय ।।46।।
सज्जनता कैसे बने ? शुभ गुण विद्या साथ ।
कौन अधोगत में धंसे ? भज्यो न जिन रघुनाथ ।।47।।
स्वाध्याय किस का करे ? सद्ग्रन्थन नित प्यार ।
उतम संगत कौन की ? संत कोविद गुण धार ।।48।।
परम पुरुषार्थ वस्तु क्या ? मुक्ति यत्न सत ज्ञान ।
कौन सुपात्र दान हित ? दीन संतोषी जान ।।49 ।।

Scanned with Cam

शुभ तीर्थ है कौन जग ? अंतःकरण सुधार ।
तीर्थ तर सेवा कहा ? मात पिता गुरु सार ।।50 ।।
उत्तम ध्यान स्मरण कहा ? ओम सोहं तत्सार ।
वेद मंत्र गुरु मूल क्या ? ओ3म् राम उपकार ।।51।।
मोक्ष मूल वर कौन कह ? सतगुरु कृपा जान ।
चौरासी कैसे कटे ? गुरु मुखि आतम ज्ञान ।।52।।
प्रिय शत्रु जग कौन है ? निज कुटुम्ब को जान ।
दुःख दोषों का हेतु कहा ? ममता गर्व महान ।।53।।
व्यशन रत कारण कहा ? नीच संगत पहिचान ।
अत्यन्त दोषी कौन है ? हिंसक प्राणी मान ।।54।।
जन विरोधी गण क्यों बढे ? पक्षपात प्रधान ।
जन विरोधी क्यों बने ? सत्य–कटु प्रकट बखान ।।55।।
आवागन को हेतु क्या ? अविद्या रत अज्ञान ।
जन्म मरण कैसे मिटे ? स्मरण तप निज ज्ञान ।।56।।
जन हितकारी कौन जग ? न्याय–शीतल–संतोष ।
त्याग करने के योग्य क्या ? परनिन्दा–दशदोष ।।57।।
शूरवीर को जगत में ? मन जीते सो सूर ।
नारी का क्या धर्म जग ? पतिव्रता गुण पूर ।।58।।
सब ग्रन्थन को इष्ट क्या ? जन–जीवन निस्तार ।
जीवन श्रेष्ठ किसका बने ? पर उपकार सुधार ।।59।।
संग्रह करना कौन क्या ? उत्तम गुण जिज्ञास ।
त्याग योग्य क्या भक्त को ? भोग्य शक्ति की फास ।।60।।

Scanned with Cam

अधीरज रह कौन जग ? रहित सुशील विचार ।
कैसे बने उदार जग ? लोभ त्याग अहंकार ॥61॥
बन्धन का कारण कहो ? माया मोह पसार ।
माया मोह कैसे कटे ? सद् ग्रन्थ ज्ञान विचार ॥62॥
सदा त्यागने योग्य क्या ? जल्पा वितंड विवाद ।
संशय टूटे जिज्ञासु का ? सारग्रही गुण ज्ञाद ॥63॥
आपति काल हेतु कहा ? अति अधीरज ज्ञान ।
तीर्थ करे कारण कहा ? निर्मल भाव पिछान ॥64॥
बुद्धि स्वच्छ कैसे बने ? सतसंग संतन बोल ।
आनन्द का कारण कहो ? वृति संतोष अडोल॥65॥
परमगति का द्वार क्या ? श्रेष्ठ साधना ज्ञान ।
भक्ति का अधिकारी को ? निष्कामी जन जान ॥66॥
सदा सुखी जग कौन है ? सार ग्रही पय पान ।
देव लक्षण कहो कौन वर ? सतो वृति प्रधान ॥67॥
कठिन जीतना कौन क्या ? मनो वृतियाँ मान ।
आनन्द में क्या विघ्न है ? वृति विक्षेप पिछान ॥68॥
प्रबल शक्ति जग में कहो ? आतम बल अपार ।
द्वैष द्वैत परिणाम को ? सर्वस्व नास, परिवार ॥69॥
मानव वृति स्वभाव क्या ? रजो प्रकृति प्रधान ।
पशु दानव सम कौन जग ? तमो मूढ वृति जान ॥70॥
सदाचार ते लाभ क्या ? हृदय शुद्ध हो जाय ।
अति भोजन किये कहा ? रोग–आलस्य आय ॥71॥

Scanned with Cam

सभा को भूषण कौन जग ? श्रेष्ठ ज्ञान विद्वान ।
अनर्थ का हेतु कहो ? मोह काम अज्ञान ।।72।।
साधु की वृति कहो ? तिव्र वैराग्य उपराम ।
श्रेष्ठ वृति लख कौनसी ? निष्प्रेही निष्काम ।।73।।
तप करने का फल कहा ? चित-शुद्धि सद्ज्ञान ।
भक्ति ज्ञान शोभा कहा ? नम्र सरल मतिमान ।।74।।
प्रेम लक्षण कहो कौन है ? ममता त्वंता हान
उन्नति का कारण कहा ? उत्तम विचार महान ।।75।।
नित जाग्रत में कौन है ? विवेकी ज्ञानी जिज्ञासु ।
सदा सुषुप्ति कौन नर ? मोह अज्ञान निवासु ।।76।।
सज्जन जन त्यागे कहा ? अहंकार अभिमान ।
आशा जन किसकी करे ? परमात्म श्रीमान ।।77।।
फल अभ्यास का होत क्या ? तत्वदर्शन सदज्ञान ।
स्मरण रखने योग्य कहा ? निज मृत्यु-भगवान ।।78।।
प्रारब्ध स्वरूप क्या ? देह स्थिति कर्म जान ।
अन्तस्थ प्रेरक कौन है ? पूर्व कर्म संग ज्ञान ।।79।।
ज्ञान ध्यान को हेतु क्या ? साधन संग-दृढ राग ।
सद् वैराग्य हेतु कहा ? परम विचार सुमाग ।।80।।
योग्य ख्याति कैसे बढे ? व्यक्तित्व भाव उच्च मान ।
सतगुण धारक प्रथमा कहा ? श्रद्धा यत्न गुण ज्ञान ।।81।।
निष्काम कैसे बने ? त्याग प्रवृत्ति माग ।
जन स्वार्थ कैसे बढे ? लालच माया लाग ।।82।।

Scanned with Cam

सदा भूलने योग्य कहा ? निज शुक्रत उपकार ।
व्याकुलता कैसे बढे ? ममता शुद्र अपकार ॥83 ॥
कैसा हो व्यवहार जग ? अति निर्मल निर्दोष ।
मानव का कल्यान कहो ? सत्य विचार संतोष ॥84॥
जन सहकारी कौन है ? शुभ चिंतन आचार ।
वैदिक कर्म आचार क्या ? दैनिक हवन गुणधार ॥85॥
कहने योग न कौन जग ? निज प्रशंसा कार ।
दीन दुःखी कैसे बने ? व्यर्थ खर्च अनाचार ॥86॥
अति क्लेश में कौन दुःख ? वैरी–मीत हर्ष शोक ।
मद्य तुल्य को जगत में ? मिथ्या गर्वादि रोक ॥87॥
वाद विवाद कारण कहा ? वृति अल्प अज्ञान ।
ताप मूल औ पाप क्या? दुराचार दुःख मान ॥88॥
तपक्षीण मति मंदता ? दम्भ–क्रोध–पाखण्ड ।
सदा जीतने योग्य क्या ? मनोनिग्रह गुण–मण्ड ॥89॥
कामजीत कैसे बने ? ज्ञान वैराग–विचार ।
योग सिद्धि कैसे बने ? जिभ्या उपस्थ दो मार ॥90॥
नहिं जानने योग क्या ? भवितव्य का ज्ञान ।
ज्ञान प्रयोजन है कहा ? संशय नास–अज्ञान ॥91॥
श्रेष्ठ पदार्थ पाय किमि ? उत्तम भाव सदज्ञान ।
आदर नित किसका करे ? उत्तम आचरण जान ॥92॥
सदा त्यागने योग्य संग ? व्यभिचारादि जोय ।
दुस्तर पीड़ा कौन जग ? शोक–चिंता सम होय ॥93॥

Scanned with Cam

सुख दुःख का हेतु कहा ? संस्कार निज जान ।
दुस्तर निवृति यतन का ? श्रेष्ठ विचार सुज्ञान ॥94॥
निवृति योग को फल कहा ? शान्ति सुख अपार ।
माया सत्य कब तक लहै ? दशा अज्ञान मंझार ॥95॥
दुःख पावत घन कौन जग ? भोगी पुरुष अज्ञान ।
महापतित है कौन जग ? देहावित अभिमान ॥96॥
ईश्वर कृपा क्या भई ? नर तन रूप संवार ।
गुरु कृपा भई कौन लख ? पाया ज्ञान विचार ॥97॥
सदा सीखने योग्य क्या ? अपने दोष निहार ।
प्रेम बढन का पन्थ क्या ? भेद दूर–कर प्यार ॥98॥
भोजन कितना खाय नर ? सदा–अलप सुजान ।
निन्द्रा कितनी श्रेष्ठ है ? छः घण्टे परमान ॥99॥
जीवपना भासत कहा ? बुद्धि अल्पज्ञ ज्ञान ।
अविद्या वस्तु कौन है ? आवर्ण शक्ति मान ॥100॥
अविद्या कितने रूप की ? मूला तूला दोय ।
माया का स्वरूप क्या ? अनिर्वचनीया जोय ॥101॥
दुष्टों संग कैसे रहे ? उदासीन अति आन ।
श्रेष्ठ कर्त्तव्य ध्यान क्या ? केवल आतम ध्यान ॥102॥
जड़ता का लक्षण कहो ? ज्ञान शुन्य पहिचान ।
चेतन सता का लक्ष्य क्या ? दृष्टा शुद्ध अधिष्ठान ॥103॥
जग विस्तार कैसे भया ? माया–आवर्ण मान ।
इन्द्रिय गण प्रेरक कहा ? वृति मनोमय ज्ञान ॥104॥

Scanned with Cam

प्रकृति गण कौन अह ? कारण अनादि अज्ञान।
जगत अनादि क्या सदा ? ईश–जीव भ्रम जान ।।105।।
हेतु मोक्ष को क्या कहै ? ब्रह्म यथार्थ ज्ञान।
तीन गुणों से मुक्त हो ? ब्रह्मवेता ब्रह्मजान ।।106।।
उत्तम गुरु को जगत में ? निष्कामी ब्रह्मज्ञानि।
उत्तम अधिकारी शिष्य को ? गुरु भक्त गुणवानि ।।107।।
सेवा कितनी जगत में ? तन मन धन गुण गान।
उत्तम सेवा कौन है ? आज्ञा–पालन ज्ञान ।।108।।
लाभ उत्तम क्या जगत में ? साधन युत ब्रह्मज्ञान।
चिंतन करना कौन का ? ओम शुद्ध ब्रह्म जान ।।109।।
कर्म बन्धन टूटे कहो ? किये ओम के ध्यान।
ध्यान कौन विधि से लहे ? निरंतर स्वाँस मिलान ।।110।।
मृत्यु विजयी कौन जग ? उत्तम ज्ञानी निष्फंद।
वेद ज्ञान का मूल क्या ? ओम–ज्ञान लय–द्वंद ।।111।।
सामवेद का रहस्य क्या ? विद्या संगीत सुजान।
ऋग्वेद का सार क्या ? कर्म–विधैय कर दान ।।112।।
यजुर्वेद का रहस्य क्या ? तत्व अध्यात्म ज्ञान।
अथर्ववेद का सार क्या ? यज्ञ उपास विधान ।।113।।
सुख दुःख से अतीत को ? ब्रह्मदर्शी ऋषि जान।
योग करण अभ्यास को ? ब्रह्मात्म सत ध्यान ।।114।।
मल विक्षेप आवर्ण कहो ? तीन अन्तःकरण दोष।
साधु के लक्षण कहो ? शील साधन संतोष ।।115।।

Scanned with Cam

सज्जन का बर्ताव क्या ? प्रेम सत्य संग जान ।
सर्वदोष नासन विधि ? सत्य व्यवहार सुज्ञान ॥116॥
प्रवृत्ति का फल कहा ? तृष्णाधिक अभिमान ।
तत्वदर्शी कौन जन ? लक्षणी संत विद्वान ॥117॥
चिद्जड़ ग्रन्थी कौन यह ? अविद्या माया अज्ञान ।
तात्पर्य वैदान्त को ? आतम ब्रह्म शुभ ज्ञान ॥118॥
श्रेष्ठ समाधि कौन जग ? भाव एकता ज्ञान ।
परम हंस किसको कहै ? उत्तम ज्ञान गुणवान ॥119॥
लक्ष्य कहा अवधूत का ? उच्च धारणा ध्यान ।
सदा कृतार्थ कौन जग ? जीवन मुक्त पहिचान ॥120॥
युगल शतक प्रश्न कहै ? उत्तर उभय शत जान ।
दोहा छन्द को शतक यह, वरण्यो बुद्धि अनुमान ॥121॥
नीति रीति गति ज्ञान रस, भक्ति विषयक जान ।
प्रश्नोत्तर यथाविधि कहे, संक्षिप्त ज्ञान परमान ॥122॥
पिंगल कवि ज्ञाता नहीं, लघु धी बालक साज ।
आयु रामप्रकाश तत, वर्ष उन्नीस गई भाज ॥123॥
कवि कोविद गुरु संत जन, ज्ञान वृद्ध वृन्द सार ।
लघु धी काव्य विचार के, क्षमा करो अवि धार ॥124॥
'रत्नमाल चिंतामणि', माला इति वृत जान ।
उरधारे शोभे सभा, पहने संत सुजान ॥125॥
शान्ति सुख स्वरूप सो, शान्ति रामप्रकाश ।
शान्ति प्रश्नोत्तर माल यह, ॐ शान्ति सुखराश ॥126॥

Scanned with Cam

प्रश्नोत्तर गुरु–शिष्य के, शतक इति वृत ज्ञान ।
"रामप्रकाश" वरण्यो भले, रत्नमाल गुणमान ॥127॥
संवत सहस्र युग नभ कहै, शशि नभ षष्टम वार ।
पौष शुक्ल तिथि चतुर्थी, रचयो शतक सुविचार ॥128॥

इति श्री रत्नमाल चिंतामणि का प्रथम–प्रश्नोत्तर–दोहा–
विष्णुमाला अंक प्रकाश समाप्त

•••

प्रश्नोत्तरावली–द्वितीय माला

दोहा–छन्द

उत्तम वन्दन देव को, सदा नमस्ते योग ।
सच्चिदानन्द गुरु ओम को, नित प्रणाम संयोग ॥1॥
"उत्तमराम" गुरुदेव को, वन्दन वार अनन्त ।
"रामप्रकाश" नित वन्दना, ताप तीन कर अन्त ॥2॥
"रामप्रकाश" वन्दन करे, गुरु–ईश्वर गणवेद ।
कृपा होत दुःख सब कटे, ताप पाप भव खेद ॥3॥
"रामप्रकाश" संत रूप सब, ज्ञानी गुण कवि वेद ।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, उत्तमराम के भेद ॥4॥
उत्तम राम प्रकाश को, वन्दन रामप्रकाश ।
कीजे रामप्रकाश मय, दीजे रामप्रकाश ॥5॥
हृदय रहस्य हुलास को, कह्यो सरस मतिलाय ।
रत्नमाल चिंतामणि, रामप्रकाश गम पाय ॥6॥

Scanned with Cam

कवि गुण कोविद चतुरमति, शिक्षा ज्ञान गमहीन ।
"रामप्रकाश" क्षमा करो, बाल गति अति चीन ॥7॥
हृदय शंका प्रश्न मय, कीजे शरण गुरु जाय ।
उत्तर दीन दयाल के, संशय शोक सब ढाय ॥8॥
उत्तम गुरु मनाय के, उत्तम शीश नमाय ।
उत्तम गति मति रहस्य को, उत्तम कह्यो बनाय ॥9॥
संक्षिप्त प्रश्न है शंका मय, उत्तर गुरु समाधान ।
ज्ञान ध्यान मति कह्यो, रामप्रकाश बखान॥10॥
आनन्द का सहयोग क्या ? दृढ़ अभ्यास ब्रह्मज्ञान ।
एक दृष्टि कब दृढ़ हो ? परमार्थ उच्च ध्यान ॥11॥
निष्कर्तव्य कौन विधि ? बुद्धि निश्चयात्मक ज्ञान ।
मोह निवृति कैसे बने ? विरति–तत्व गुण जान ॥12॥
उचित गुरु को बात क्या ? नित्य ज्ञान उपदेश ।
मुक्ति का अधिकारी को ? संशय रहित उद्देश ॥13॥
ज्ञानमाहि प्रतिबन्ध क्या ? कुतर्क दृष्टि मान ।
आनन्द वत कैसे बने ? गुरु विधि आतम ज्ञान ॥14॥
हठ योग समाधि क्या ? वृत्ति सर्वलय ज्ञान ।
उत्तम ज्ञानी कौन जग ? अन्तर वृतिलय जान ॥15॥
सत्य का लक्षण क़हो ? तीन काल रस जाय ।
स्थिति प्रज्ञा सु कौन है ? ज्ञानी यथार्थ सोय ॥16॥
मन अन्तस्थ का बाध किम ? जग मिथ्या निश्चय जान ।
मानव बंधा कौन में ? विषय राग भव मान ॥17॥

Scanned with Cam

भव डूबत किस विधि तरे ? सतगुरु साधन संग ।
नौका क्या भव तरन को ? सतसंग ज्ञान प्रसंग ॥18॥
मुक्ति रूप क्या जगत में ? विषय–विचार वैराग ।
लक्षण क्या उपराम के ? भोग आश दे त्याग ॥19॥
घोर नर्क के रूप क्या ? दुःख रूप तन एह ।
स्वर्ग रूप क्या जगत में ? सतसंग गुणवर जेह ॥20॥
जग हरण को समर्थ क्या ? निज आतम–ब्रह्मज्ञान ।
मुक्ति हेतु कारण कहो ? निज ब्रह्मज्ञान निधान॥21॥
स्वर्ग हेतु क्या जगत में ? अहिंसा पर उपकार ।
नरक द्वारा श्रेणी कहो ? जग तृष्णा–मति नार ॥22॥
नित्य सुखी सोवे सही ? संत समाधि–धार ।
निशिदिन जागत जगत में ? संत विवेकी सार ॥23॥
विषम ज्वर क्या सृष्टि में ? मन चिंता दुःख मुल ।
मूर्ख कौन संसार में ? सत्याऽसत्य की भूल ॥24॥
करने योग क्या जगत में ? हरि संत सेव विचार ।
जीवन धन्य किस का भला ? वर्जित सर्व विकार ॥25॥
परम सुबोध क्या जगत में ? मुक्ति ज्ञान निवान ।
वर विद्या को सार क्या ? समदृष्टि कल्यान ॥26॥
सर्व जगत जीयो किंहि ? जिहिं जीत्यो मन आप ।
लाभ बड़ा क्या सृष्टि में ? सतसंग नरतन जाप ॥27॥
सदा जगत में काम कहा ? तामस ताप तज प्रेम ।
कौन कर्तव्य मनुष्य को ? धर्म दान हरि नेम ॥28॥

Scanned with Cam

जग भासत सो मूल क्या ? अविद्या तम धन आस।
कौन विघ्न या जगत में। काम क्रोध भय खास ॥29॥
महावीर को शूर है ? मार क्रोध मन मार।
धीर बुद्धिवंत कौन है ? माया–कटाक्ष न धार ॥30॥
अमृत सम है जहर क्या ? विषम–भोग जग चाहि।
जन्म दुःखी को जगत में ? विषयाशक्त नर आहि ॥31॥
पूजा लायक कौन जग ? ब्रह्म तत्व गुरु संत।
धन्य धन्य को जगत में ? पर–उपकार करंत ॥32॥
रोग असाध्य कौन है ? जग–भासत अज्ञान।
औषधि दीर्घ रोग की ? परम विचार सुज्ञान ॥33॥
भूषण को भूषण कहा ? शील विद्या गुण खान।
उत्तम अवनी तीर्थ क्या ? अन्तर मन शुद्ध जान ॥34॥
तजन योग्य क्या जगत में ? लोभ काम कुविचार।
ग्रहण योग्य क्या वस्तु हैं ? वेद ज्ञान संत सार ॥35॥
परम वस्तु क्या भक्त हित ? शम सतसंग संतोष।
संत कौन बड़भाग जग ? मोह द्रोह नाहि रोष ॥36॥
जन को वैरी कौन है ? पाँच इन्द्रिय रस जान।
मित्र कौन है जगत में ? विषय पंचजित ज्ञान ॥37॥
कौन दरिद्री जगत में ? आशा तृष्णा मन मोहि।
कौन सदा धनवंत है ? ज्ञान संतोष अद्रोहि ॥38॥
दुःख की फाँसी कौन है ? दुर्मति द्वैत अज्ञान।
मन की मदिरा कान जग ? धन–सुत–तरुणी–जान ॥39॥

Scanned with Cam

कौन होत बहरा कहो ? लोभातुर अज्ञान ।
मृत्यु समान है कौन दुःख ? कुयश सुने जिन कान ॥40॥
सतगुरु का कर्तव्य कहा ? शिष्य को दे उपदेश ।
साचा शिष्य को जगत में ? परिश्रमी भक्त विशेष ॥41॥
कौन पशु सम जगत में ? विद्या हीन विमूढ ।
बसिये जग में कौन गृह ? संत मंदिर जन गूढ ॥42॥
ब्रह्मज्ञान किसको मिले ? श्रद्धावान मतिमान ।
सर्व दुःखन को मूल क्या ? तन धन ममता मान ॥43॥
चित स्वभाव शुद्ध कौन विधि ? स्वार्थ को कर त्याग ।
मोहन मंत्र जग में कहा ? रूप सेवा मृदु राग ॥44॥
कौन योग्य सत्कार के ? तत्वदर्शी संत मान ।
सतो तपस्या कौन विधि ? मनोनिग्रह गुण ज्ञान ॥45॥
संगत किस की ना करे ? नीच पापि खल पान ।
चाहत मुक्ति कौन जन ? प्रेमी भक्त सुजान ॥46॥
बड़पन किसको मिलत है ? सहज मिले सो पाय ।
नीच ऊँच कैसे बने ? आचरण शुद्धाशुद्ध गाय ॥47॥
वैरी कौन बलवंत जग ? क्रोध मद अज्ञान ।
विषय–तृप्ति होत ना ? खल मतिमंद अजान ॥48॥
जन्म धन्य जग कौन को ? ज्ञान बहुरि न आय ।
मरण धन्य है कौनको ? ज्ञानी तत्व समाय ॥49॥
मुक्ति को स्वरूप क्या है ? द्वैत नाश तूँ मार ।
सर्व भय न व्यापे कहा ? मुक्ति पद सुख सार ॥50॥

Scanned with Cam

निशिदिन खटुके कौन दुःख ? मूर्ख कुल–सुत जान ।
सेवा किसकी कीजिये ? संत गुरु वृद्ध महान ॥51॥
तन में तस्कर कौन है ? काम क्रोध भट मान ।
शोभे सभा मे कौन जो ? वीर धीर विद्वान ॥52॥
मात नारि सम प्रेमि को ? सतगुण विद्या ज्ञान ।
दिये दान नित बढत क्या ? विद्या धन गुण मान ॥53॥
या जग भय सु काहि को ? दोष निंद्या अपवाद ।
दुर्लभ लाभ जग माहि क्या ? गुरु–ज्ञान संग साद ॥54॥
बन्धु कौन सुख सिन्धु जग ? विपत्ति सहायक होय ।
मात तात जग माहि को ? विद्या पोषण दे जोय ॥55॥
विद्या निष्फल कौन की ? ज्ञान–गुणों बिन पाय ।
प्रकट पशु सम कौन है ? धर्म–हीन खल गाय ॥56॥
सुधा रूप विष कौन है ? विषय हलाहल मार ।
मिंत समान अरि कौन है ? वनिता सुत घर बार ॥57॥
चंचल चपला कौन जग ? जोभन धन परिवार ।
दान कौन शुभ जगत में ? अन्न–जल–विद्या विचार ॥58॥
तुच्छ दान फल कौन बहु ? समय सुपात्र दान ।
थिर ना रहवे वस्तु को ? आयु मायाजग जान ॥59॥
आलस्य त्याग चिंत कौन की ? ब्रह्म सत भिन्न असार ।
विषय त्याग फल कहा हो ? शंकर शंका–निवार ॥60॥
भक्ति सिद्ध किस की सदा ? निर्पक्षी सत ज्ञान ।
ज्ञान–सिद्ध किस को हुए ? निर्मोही निष्प्रेही मान ॥61॥

ब्रह्मलखे क्या होत है ? मिटे मोह–भव–फन्द ।
ब्रह्म स्वरूप कैसा कहै ? अनन्त सच्चिदानन्द ।।62।।
ईश्वर का कारण कौन है ? मापा सात्विक अंश ।
ईश्वर का वासा कहां ? सकल ब्रह्मण्ड निरंश ।।63।।
ईश्वर की हद कहाँ तक ? ब्रह्म अनन्त अपार ।
ईश्वर का स्वरूप क्या ? आनन्द चित विचार ।।64।।
कारण जीव का कौन है ? तामस अविद्या अंश ।
वास कहाँ है जीव का ? पिण्ड वास सुख वंश ।।65।।
हद कहाँ तक जीव की ? तुरिया पद निरधार ।
जीव स्वरूप क्या कहत है ? अनन्त चेतन सार ।।66।।
जगत कारण क्या कहत है ? भ्रान्ति भ्रम विचार ।
वास जगत का है कहाँ ? बुद्धि–बोद्ध अचार ।।67।।
हद जगत की कहाँ कह ? ज्ञान हुए भ्रम नाश ।
जगत स्वरूप क्या कहत है ? क्लेश रूप विनाश ।।68।।
कारण ज्ञान का है कहा ? ज्ञानी सतगुरु राम ।
वास ज्ञान का है कहाँ ? सत अभ्यास निःकाम ।।69।।
हद ज्ञान की कहाँ कह ? इच्छा रहित निर्द्वन्द ।
ज्ञान–स्वरूप क्या कहत है ? शुद्ध अपरोक्ष अमन्द ।।70।।
सर्व ब्रह्म वास कहाँ ? घट मठ पूर्ण ज्ञान ।
क्रिया भ्रान्ति ता सम्भवे ? अविद्या भ्रम तक मान ।।71।।
जाग्रत में तत्व किते ? ब्यालिस रचित सुईश ।
स्वपने में तत्व कहो ? त्रिपुटी जीव रचीश ।।72।।

Scanned with Cam

सुषोप्ति किसको कहै ? चिदाभास अज्ञान ।
तीन अवस्था सत्य यह ? व्यतिरेक सम जान ॥73॥
स्थूल शरीर किसको कहै ? तत्व पाँच पच्चीस ।
सुक्ष्म तन कैसे कहै ? सतरह तत्व ईश ॥74॥
कारण तन कैसे बना ? झूँठ अज्ञान मंझार ।
देह तीन क्या सत–असत ? झूँठी तीन विकार ॥75॥
मुक्ति हेतु क्या जगत में ? सतसंग संतन–सेब ।
संत कौन वर जगत में ? ब्रह्मज्ञान गम लेव ॥76॥
मौन कितनी मुनिजन कहै ? सो है चार प्रमान ।
चार मौन को भेद क्या ? तन मन वाणी ज्ञान ॥77॥
श्रेष्ठ मौन है कौन सो ? ज्ञान मौन सुख मान ।
ज्ञान परीक्षा क्या कहै ? व्यापक ब्रह्म विज्ञान ॥78॥
ज्ञान हेतु क्या प्रकट है ? सतसंग धर्म बखान ।
ज्ञान फल क्या होत है ? जीवन मुक्त निरवान ॥79॥
धर्म अंग कितने कहो ? दश अंग परम प्रधान ।
दशों अंग वासा कहाँ ? तन मन वाणी मान ॥80 ॥
धर्म अंग है प्रथम सो ? क्षमा हृदय में धार ।
धर्म अंग को दूसरा ? तन मन अहिंसा सार ॥81॥
धर्म अंक है तीसरा ? तन मन दया सुधार ।
धर्म अंग चौथा कहो ? कोमल बोल सत सार ॥82।
धर्म अंग क्या पाँचवा ? तन मन तप–सत जान ।
धर्म अंग क्या षष्टम ? अन्न जल विद्या दान ॥83॥

Scanned with Cam

धर्म अंग क्या सप्तमा ? ब्रह्मचर्य अर्थ विचार ।
धर्म अंग क्या अष्टमा ? तन मन गृह शुचि धार ॥84 ॥
धर्म अंग नवमा कहो ? तृष्णा–रहित संतोष ।
धर्म अंग दशमा कहो ? शम दम बोध अदोष ॥85॥
धर्म धारन परिणाम क्या ? लोक परलोक सुधार ।
धर्म फल क्या देह में ? दश दोष परिहार ॥86॥
दश दोष का वास कहाँ ? तन मन वाणी जान ।
दश दोष परिणाम क्या ? संकट नर्क निदान ॥87 ॥
तन में केते दोष है ? चौरी हिंसा परनार ।
मन में केते दोष है ? चिंता, तृष्णा *परमार॥88॥
वाणी दोष कहो खोल के ? निन्दा झूँठ कठोर ।
चौथा वाणी दोष क्या ? वाक चपलता सोर ॥89 ॥
निरदोषी जीवन फले ? मुक्ति ज्ञान गुण पाय ।
नीति अंग कहो कौन है ? धर्म–दोष अंग गाय ॥90॥
राजनीति के अंग क्या ? साम दाम दण्ड भेद ।
वेद काण्ड कितने कहै ? कर्म उपासन वेद ॥91॥
त्राटक साधे कौन विधि? दृष्टि दृढ सधाय ।
प्राणायाम कैसे करे ? सोहम् स्वास मिलाय ॥92॥
प्राण अभ्यास अंग को कहो ? पूरक प्रणव चार ।
प्राणायाम अंग दूसरा ? कुंभक कला दुधार ॥93॥

* पर दोष चिन्तन

प्राणायाम अंग तीसरा ? रेचक बारह मात ।
मुख्य तत्व है कौन से ? पांच तत्व गुण जात ॥94॥
पांच त्व कहो कोन है ? नभ–जल तेज मू आप ।
सुरति योग सिद्धता कहो ? मन वाणी प्रणव जाप ॥95॥
तीन दशा है कौन सी ? तीन अवस्था ज्ञान ।
मिथ्या कैसे मानिये ? सीपी–भोडल मान ॥96॥
अनव्य कौन कैसे कहे ? माला–सूत ब्रह्म–ज्ञान ।
व्यतिरेक काको कहै ? माला–मणका जान ॥97॥
कनिष्ठ पूजा कौन की ? आन–पत्थर के देव ।
उत्तम पूजा कौन की ? संत निजात्म भेव ॥98॥
देवल उत्तम कौन है ? चलता तन चित जान ।
माला उत्तम कौन है ? स्वासा सुमिरण ध्यान ॥99॥
सर्वोत्तम तीर्थ कहा ? संत ज्ञानी गुरु जान ।
कौन देव पूजा करे ? देवल देव तनमान ॥100॥
गूँगा जग में कौन निज ? ज्ञान–मौन संत धार ।
बहिरा जग में कौन निज ? विषय–श्रवण जित तार ॥101॥
विश्वास पात्र जग कौन ना ? मन और तृष्णा–नार ।
धाम अद्वितीय कौन सुख ? ब्रह्मानन्द श्रेय धारि ॥102॥
मुक्त स्वरूपी है कौन जग ? निर्द्वन्दी मस्तान ।
कौन होय निर्वाण पद ? निर्लोभी निरवान ॥103॥
पशु नर में अधिकता ? ज्ञान सर्व सुख खान ।
निज आतम के ज्ञानबिन ? पुरुष–पशु सम जान ॥104॥

Scanned with Cam

शोभे पण्डित सभा कब ? भक्ति ज्ञान गिरा गान ।
भाषा शुद्ध कब होत है ? व्याकरण ग्रन्थ परमान ॥105॥
कुल शोभे कहा वस्तु ते ? एक सगुण सन्तान ।
पश्च पात्र भूषण कहा ? अन्न वस्त्र शुभ दान ॥106॥
मूढ सभा कब शोभता ? वाक् मौन चित–धार ।
अग्नि सोभा होत कब ? हवन पाक सत सार ॥107॥
निशि कब होत सुहावनी ? शीतल उज्वल चन्द ।
मुक्त रूप कब सुहावनी ? ज्ञान सहित निर्द्वन्द ॥108॥
मुख शोभा भूषण कहा ? मधुर गिरा सत ज्ञान ।
दृष्टान्तन को कह तात्पर्य ? सरल सिद्धान्त सुजान ॥109॥
कलाकार किस को कहै ? कृति रमणीय धार ।
कला उद्देश्य है कहा ? सुख सुविधा जन सार ॥110॥
हरि हर बैरी कौन है ? गुरु बेमुख खल जेहु ।
देह धरे को गुण कहा ? देहु दान गुण लेहु ॥111॥
आतम कैसे जानना ? सब कर्म साधन छेद ।
जान अनादि पदार्थ को ? प्रकृति जीव ब्रह्म भेद ॥112॥
जन्म–मरण किस का अहै ? तत्व मिलन देह जान ।
क्षुधा पिपासा कौन को ? प्राण धर्म पहिचान ॥113॥
हर्ष शोक किसको अहै ? मनके धर्म पिछान ।
गुण धर्म है कौन से ? रज सत तम त्रय जान ॥114॥
कोश कितने है मूल क्या ?आनन्द कारण अज्ञान ।
कार्य रूप है कोश सो ? अन्न मन प्राण विज्ञान ॥115॥

Scanned with Cam

ब्रह्म विशेषण कौन है ? सत चित आनन्द अद्वैत ।
जीव विशेषण कौन है ? असत जड़ क्लेश द्वैत ।।116।।
ईश्वर को स्वरूप क्या ? माया विशिष्ट चित ज्ञान ।
जीव स्वरूप सो क्या कहै ? अविद्या विशिष्ट प्रमान ।।117।।
मुक्त स्वरूप क्या कौन है ? सत चित एक आनन्द ।
संत पाव सुख रूप क्या ? अचल सु परमानन्द ।।118 ।।
सत मुक्ति क्या जगत में ? जीवन्मुक्त विज्ञान ।
निर्बन्धन स्वरूप क्या ? जात न बात अज्ञान ।।119।।
गन्ध सुगन्ध क्या द्वैत है ? एक सु ब्रह्म अपार ।
सर्व ब्रह्म दर्शे जभी ? निश्चय दृढ़ विचार ।।120।।
उभय शतक प्रश्न कहे, उत्तर युगल शत जान ।
दोहा शतक द्वितीय कह्यो, प्रश्नोत्तर को ज्ञान ।।121।।
"उत्तमराम" सतगुरु सदा, रामप्रकाश निज नाम ।
कागामार्ग जोधपुर, संत धाम विश्राम ।।122।।
लघु बुद्धि कवि चतुर ना, मति गति बालक ज्ञान ।
आयु रामप्रकाश तन, वर्ष उन्नीस प्रमान ।।123।।
रत्नमाल जनहित करन, समझे कवि गुण चन्द ।
जिज्ञासु जन सुख लहै, पढे मिटे उर द्वन्द ।।124।।
नीति रीति उपदेश को, ज्ञान ध्यान गति ज्ञान ।
प्रश्नोत्तर करके कह्यो रामप्रकाश प्रमान ।।125।।
संवत वृषभ नभ मेष नभ, धन शुक्ल पक्ष जान ।
रवि ऋतु तिथि दश बजे, लिख्यों शतक निरवान ।।126।।

Scanned with Cam

गुरु–शिष्य संवाद को, शतक प्रश्नोत्तर ज्ञान ।
संक्षिप्त ज्ञान वरण्यो भलो, शास्त्र रहस्य बखान ।।127।।
श्रुति रहस्य शान्ति इति, संत वाणी गम शान्ति ।
"रामप्रकाश" गति मति लहै, निश्चय मुक्ति भ्रान्ति।।128।।

इति श्री रत्नमाल चितामणि का द्वितीय–प्रश्नोत्तर–दोहा–
विष्णुमाला अंक प्रकाश समाप्त

•••

प्रश्नोत्तरावली–तृतीय माला

दोहा–छन्द

परमरूप गुरुदेव को, सत चित आनन्द आप ।
सो वन्दन के योग्य है, गुण मय ज्ञान प्रताप ।।1।।
"उत्तमराम" सतगुरु नमो, प्रभु नमस्ते ज्ञान ।
सदा नमस्ते संत शुभ, रामप्रकाश सुजान ।।2।।
सतगुरु संत प्रभु एक है, नित वन्दन के योग ।
संशय शोक भ्रम तम कटे, घटे अविद्या रोग ।।3।।
गुरु गम ज्ञान प्रसाद ते, संशय शंका विच्छेद ।
"रामप्रकाश" आनन्द लहै, मिटे ताप भव खेद ।।4।।
"रामप्रकाश" गुरु गम लही, पाया ज्ञान प्रसाद ।
गूढ गति मति रहस्य ले, मेट्या भव प्रमाद ।।5।।

Scanned with Cam

सदा नमस्ते आदि लो, जन त्रिकाल विच्छेद ।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, कटे अन्तर के भेद ॥6॥
भ्रम भ्रान्ति शंका बढे, मूल अज्ञान निवास ।
जन्म मरण तब तक रहे, मूढ–भेद आवास ॥7॥
सतगुरु शरणे बैठ करि, चरण धर्‍यो तन शीश ।
वचन मान मन प्रेम धरि, वन्दन करें कवीस ॥8॥
कविता दूषण हरण कर, भूषण ज्ञान गम धार ।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, सतगुरु उत्तम विचार ॥9॥
संक्षिप्त शंकर प्रश्न मय, उत्तर मय समाधान ।
उत्तम रहस्य ज्ञान मय, रामप्रकाश उर आन ॥10॥
भव मैं नैय्या कौन है ? गुरु–मुख भक्ति ज्ञान ।
सदा नमस्ते योग्य क्या ? औम–रूप गुरु ज्ञान ॥11॥
कौन कर्तव्य नर उत्तम को ? अध्ययन वेद संत ज्ञान ।
कौनकाम करनो सदा ? शुभ इच्छा गतिमान ॥12॥
मंगल मय को देव है ? सत चित ओम प्रमान ।
श्रेष्ठ जीवन क्या कौन है ? भक्ति ज्ञान–संग ध्यान ॥13॥
दया कौन पर कीजिये ? दीन दुःखी पर जान ।
लक्षण नम्रता कौन है ? गत मद क्रोध रु मान ॥14 ॥
माया–फाँस टूटे कभी ? हो निज आतम ज्ञान ।
कर्म फाँस किसके बंधे ? ममत्व बुद्धि में मान ॥15॥
कर्म–बन्ध कैसे कटे ? संत ज्ञान गुरु–ज्ञान ।
पुण्यक्षीण को हेतु क्या ? निज गुण गर्व महान ॥16॥

Scanned with Cam

अति शत्रु मय कौन है ? विषय रत मन गो जान ।
परम मित्र जग कौन है ? मन–इन्द्रिय जित ज्ञान ॥17॥
दृढ बन्धन कहो कौन है ? विषयाशक्ति गतिमान ।
मृत्यु समान क्या भयप्रद ? निज प्रमाद अज्ञान ॥18॥
सम्पत्ति वान को जगत में ? जन संतोषी एक ।
महा दरिद्री संसार में ? तृष्णावान अनेक ॥19॥
परम प्रेम अंक विषय कहा ? सत चित आतम ज्ञान ।
प्रेम स्वरूप क्या सत है ? शुद्ध प्रेमास्पद मान ॥20॥
महाकष्ट को हेतु क्या ? मन दुर्वेग विचार ।
प्रबल शत्रु है कौन जग ? मोह क्रोध मद भार ॥21॥
मन कैसे वश होत है ? सद् अभ्यास वैराग ।
आतम प्रत्यक्ष कब पाईये ? ज्ञान विरति अनुराग ॥22॥
साधक को क्या त्याग है ? कुतर्क दृष्टि जान ।
क्षण भंगुर क्या जगत में ? विश्व–भोग तन मान ॥23॥
साधन क्या है धर्म को ? निष्कपट सरल व्यवहार ।
श्रद्धा कैसे उरमें बढे ? भक्ति निष्काम विचार ॥24॥
देह दुःख नित क्यों रहे ? मिथ्या अहार विहार ।
भक्ति का परिणाम क्या ? प्रभु प्राप्ति दुःख टार ॥25॥
शूर कौन या जगत में ? काम समान न आन ।
शूरवीर को या परे ? कामजीत संत–ज्ञान ॥26॥
शत्रु कौन महा जगत में ? कुटुम्ब रु भ्रम विकार ।
व्याधि कौन है जगत में ? काम अग्नि भय धार ॥27॥

प्रबल अग्नि क्या जगत में ? क्रोधानल अति छान।
शीतल क्या संसार में ? सतसंग संत ब्रह्मज्ञान ॥28॥
ब्रह्मदर्शी हो कौन जग ? उत्तम साधक ज्ञान।
श्रेष्ठ कौन जग माहि है ? गत अहंकार–अज्ञान ॥29॥
कारण बन्धन को कहो ? दृढ विषयाशक्ति जान।
शुद्धभाव मुक्ति किसे ? ममत्व त्याग मान ॥30॥
धन्यवाद के योग क्या ? समदृष्टि संत ज्ञान।
सदा जाग्रत कौन है ? जीवन मुक्त संत जान ॥31॥
अदृश्य बन्धन क्या सदा ? भोग वासना आन।
दरिद्रता को हेतु क्या ? तृष्णा मूल प्रधान ॥32॥
सुख कैसे हो पुरुष को ? तृष्णा को कर नास।
जनम मरण हेतु कहा ? कारण अज्ञान निवास ॥33॥
नरक समान क्या जगत में ? नीच वृति मुढ–संग।
स्वर्ग जावे कौन जन ? जीव–दया व्रत रंग ॥34॥
चित एकाग्र कैसे हो ? कर प्रभु–ओम सु ध्यान।
संग्रह करन के योग क्या ? गुण गण श्रेष्ठ प्रधान ॥35॥
लाभ सर्वोत्म कौन है ? संत ब्रह्म–संग ज्ञान।
महा अनिष्ठ हानि कहा ? गत आयु बिन ज्ञान ॥36॥
किसको ना जग छेड़िये ? संत दीन सिंह वीर।
दुःख दाता वाणी कहो ? दीन दुराश अधीर ॥37॥
ज्ञान ध्यान कैसे घटे ? मूढ संग मद मार।
प्रति मान कैसे घटे ? मुख मांगत–घर हार ॥38॥

Scanned with Cam

शोक सिन्धु कैसे घटे ? संत–अगस्त संग ज्ञान ।
रोग अंश कैसे घटे ? औषधि–आसन ठान ।।39।।
दुःख दरिद्र कैसे मिटे ? ओम ईश्वर गुण गाय ।
ज्ञान बढे कैसे सदा ? संत ज्ञानी संग आय ।।40।।
कैसे बढे नित ध्यान जो ? तपसी संग गुण धार ।
बुद्धि विवेक कैसे बढे ? सज्जन संग नित सार ।।41।।
मोह बढे कैसे सदा ? कुटुम्ब संग परिवार ।
लोभ बढे कैसे हृदय ? धन में चित उदार ।।42।।
भवसिन्धु की सेतु क्या ? संत वाणी उर ज्ञान ।
क्रोध बढे कैसे सदा ? मुढ संगत ते मान ।।43।।
महासिन्धु गुरु कौन है ? यह जग–भवसिन्धु जान ।
भव में डूबे कौन है ? विषयी पामर मान ।।44।।
डूबत को क्या आश्रय है ? हरि ज्ञान पद योग ।
सतसंग नैया केवट जु ? सतगुरु संत संयोग ।।45।।
बन्धन में गृह कौन बन्ध ? विषयाशक्ति नर मान ।
मुक्ति रूप क्या जगत में ? विषय वैराग्य बखान ।।46।।
नरक रूप क्या जगत में ? प्रथम निज शरीर ।
स्वर्ग रूप क्या प्रकट है ? तृष्णा हीन मति धीर ।।47।।
जगत हरण को प्रबल क्या ? वेद कथित सद् ज्ञान ।
वेद ज्ञान क्या मूल है ? त्वं तत असि पद जान ।।48।।
कारण मोक्ष के कौन है ? सतगुरु पद ब्रह्मज्ञान ।
बन्धन कारण कौन है ? प्रबल अविद्या पान ।।49।।

नरक द्वार प्रधान क्या ? माया नारि रति मान ।
स्वर्ग द्वार की साधना ? अहिंसा भक्ति ज्ञान ॥50॥
सुख में सोता कौन है ? ज्ञानी ब्रह्म लय सार ।
जाग्रत सुख में कौन निज ? विवेकी ब्रह्म विचार ॥51॥
विवेक स्वरूप क्या है गुरु ? सत्य असत्य विचार ।
क्या स्वरूप वैराग्य को ? भोग–वासना टार ॥52॥
शम साधन स्वरूप क्या ? मन निग्रह निज धार ।
दम साधन स्वरूप क्या ? इन्द्रिय–विषय निवार ॥53॥
श्रद्ध स्वरूप क्या कहते हो ? गुरु शास्त्र संत प्रीत ।
समाधान किसको कहै ? अन्तस्य विक्षेप न मीत ॥54॥
साधन सो उपराम क्या ? साधन–भोग को त्याग ।
साधन तितिक्षा रूप क्या ? कष्ट सहन द्वंद लाग ॥55॥
मुमुक्षता स्वरूप क्या ? बंधन सर्वथा त्याग ।
वाँच्छा विवेकी क्या करे ? ब्रह्मानन्द अलाग ॥56॥
श्रवण शब्द कैसे करे ? मन एकान्त तनलीन ।
मनन साधन कौन विधि ? गण गुण शोध प्रवीन ॥57॥
निदिध्यासन फल क्या रहै ? संशय भ्रम तज भ्रान्ति ।
साक्षात्कार स्वरूप क्या ? अधिष्ठान शुद्ध शान्ति ॥58॥
सत्य ब्रह्म कैसे लखे ? त्वं तत शोध प्रबोध ।
क्या उपाय है ज्ञान के ? साधन आठों शोध ॥59॥
ततपद किसको कहत है ? ईश्वर निर्णय ज्ञान ।
त्वंपद स्वरूप क्या ? जीव निर्णय पहिचान ॥60॥

Scanned with Cam

ततपद वाच्यार्थ कहो ? मायिक गुण चिदाभास ।
ततपद लक्ष्यार्थ कहो ? कुटस्थ ब्रह्म अध्यास ॥61॥
त्वं पद वाच्यार्थ कहा ? अवद्यिा प्रतिबिम्ब जान ।
त्वं पद लक्ष्यार्थ कहा ? जीव साक्षी अधिष्ठान ॥62 ॥
तत त्वं में निज सत्य कहा ? साक्षी चेतन आप ।
शोद्ध का स्वरूप क्या ? असीपद तुरिय जाप ॥63॥
जीव स्वरूप निज क्या कहै ? अधिष्ठान 'अंह' बिम्ब।
ईश रूप निज क्या कहै ? सत चेतन 'ब्रह्म' बिम्ब ॥64॥
कौन जिज्ञासु ज्ञानको ? मल विक्षेप विडार ।
निज स्वरूप जाने कहा ? आवर्ण मूल उखार ॥65॥
शीघ्र काम किसको करे ? साधन परमार्थ कोय ।
आलस्य किस में करे ? कनिष्ठ कम भव जोय ॥66॥
मदिरा मम मादक कहा ? धन जोभन अभिमान ।
अंध बधिर सो कौन है ? कामी क्रोधि बखान ॥67॥
मूढ पति सो कौन है ? गुण गर्वी खल मानि ।
ज्ञानी शिरोमणि कौन है ? साधन सहित ब्रह्मज्ञानि ॥68॥
दुःखों का कारण कहो ? व्यर्थ व्यय अविचार ।
तपस्या क्षीण कैसे बने ?क्रोध दम्भ मद भार ॥69॥
पराक्रम कैसे प्रबल हो ? ब्रह्मचर्य साधन संग ।
निर्मल मति कैसे बने ? सत स्वाध्याय अभंग ॥70॥
नित्य भरोसा कौन का ? गुरु ज्ञान भगवान ।
नित्य दान कैसा करे ? सतो निष्काम सुजान ॥71॥

Scanned with Cam

पातक महा जग में कहा ? कुद्रष्टि, निंदा, परनार ।
प्राण होत मृतक कहो ? आलस लीन उचार ।।72।।
मोह नष्ट की युक्ति क्या ? भोग–साधन उपराम ।
दृढ़ फांसी संकल्प कहा ? आशा भोग मति धाम ।।73।।
प्रभु किसके आधीन है ? प्रेमी–साधक ज्ञानि ।
प्रभु भक्त पर प्रसन्न कब ? ज्ञानाद्रत गुण गानि ।।74।।
उत्तम प्रकृति कौन है ? शान्त मति मय ध्यान ।
शान्ति वृत्ति कैसे बने ? सुखद अहार सुज्ञान ।।75।।
सुखद अहार क्या कहत हो ? सादा–अल्प सुजान ।
अल्प सादे में गुण कहो ? सत्व बुद्धिबल ज्ञान ।।76।।
नीचपने को हेतु कहा ? भिक्षावृति–तमो गान ।
महत्वपन को हेतु कहा ? अयाचक वृति ज्ञान ।।77।।
संगत बुरी किस पुरुष की ? दुराचारी खल खानि ।
संगत अच्छी है कौन की ? संत विरक्त ब्रह्मज्ञानि ।।78।।
स्वर्ग साम्राज्य क्या कहो ? तृष्णा रहित सुज्ञान ।
फल समाधि को कहो ? शान्ति प्राप्त महान ।।79।।
त्याग योग्य नि[illegible] क्या कहै ? दुर्भावना मान ।
क्षमा का महत्व [illegible]हो ? निवृत्ति दुःख महान ।।80।।
सुनने योग्य सदैव क[illegible] ? भगवत गुणानुवाद ।
सात्विक तप किसको क[illegible] ? संयम मन इन्द्रिय वाद ।।81।।
नित्य काम क्या नरन के ? यज्ञ व्रत जप नेम ।
सत साधना क्या कीजिये ? सतसंग साधन प्रेम ।।82।।

Scanned with Cam

कहा करने के योग्य है ? भक्ति हरि चित आनि ।
जीवन सुख का कब बने ? भ्रम वासना भानि ॥83॥
हद विवेक की है कहा ? तुरियातीत समाय ।
तुरिया सो क्या कौन है ? साक्षी भुमिका पाय ॥84॥
पूज्य सर्वदा कौन ? समदर्शी विद्वान ।
दुःखी सर्वदा कौन है ? भोग लम्पट मुढ मान ॥85॥
जीव तीन कह दीजिये ? विश्व प्राज्ञ रु तेज ।
जीव ब्रह्म क्या अन्तरा ? आवर्ण भ्रम की सेज ॥86॥
त्रिगुण कहिये कौन है ? रज तम सत प्रधान ।
त्रिगुण देवता कौन है ? ब्रह्मा शिव हरि जान ॥87॥
चार वेद के नाम क्या ? ऋग अथर यजु शाम ।
ऋषि–स्मृति ग्रन्थ किते ? सात–बीस गुण धाम ॥88॥
तीन प्रकार के सतगुरु ? वर वरिष्ठ वरियान ।
तामे उत्तम कौन है ? उत्तम वरिष्ठ त्रयमान ॥89॥
आतम प्रदर्शक कहो ? ब्रह्म विद्या, संत जान ।
ब्रह्मविद्या है कौन सी ? गुरु–मुख आतम ज्ञान ॥90॥
परम समाधि कौन सी ? ब्रह्म एकता ज्ञान ।
सचा ज्ञानी कौन निज ? संशय रहित सुज्ञान ॥91॥
जगत विजय कौन है ? मनजित विरति जान ।
शूरवीर महा कौन है ? काम जीत मन–मान ॥92॥
उत्तम कौन सा कर्म है ? हरि–भजन सत गान ।
सुख उपाय कहो कौन है ? अनाशक्ति निरवान ॥93॥

Scanned with Cam

निष्कृष्ट कर्म है कौन सा ? विषय वासना मान ।
धन्यवाद के योग को ? पर उपकारी ज्ञान ॥94॥
भक्ति क्षीण को होत है ? भोगैच्छा बलवान ।
साधन ज्ञान कैसे घटे ? अहंकार अभिमान ॥95॥
जगत दृढ भासे किसे ? अति राग लिप्त जान ।
नित्य पालन क्या करे ? दीन धर्म गुरु-ज्ञान ॥96॥
वाणी पवित्र कैसे हो ? कोमल सत्य उचार ।
आरोग्यता किमि पाईये ? नियिमत धर्म सदाचार ॥97॥
भयभीत किस ते रहें ? दुर्व्यशन अभिमान ।
हानिकर जग कौन है ? व्यर्थ आडम्बर मान ॥98॥
महा हलाहल जगत में ? विषय-भोग असार ।
आनन्द पावे कौन जग ? निष्कामी सुविचार॥99॥
उत्तम कीर्ति कौन की ? भक्त जनों को सार ।
कनिष्ठ कीर्ति कौन की ? आस जगत की धार ॥100॥
नशा नीच क्या जगत में ? अमल मद्यादि जान ।
नशा व्यशन क्या वस्तु है ? भांग तमाकू मान ॥101॥
व्यशन दोषरत कौन हो ? मूढ खल विषय खास ।
दोष व्यशन को फल कहा ? तन धन लोक विनास ॥102॥
धर्म मूल क्या जगत में ? दया अहिंसा ज्ञान ।
अधर्म मूल क्या जगत में ? क्रोध इर्षा अभिमान ॥103॥
दुस्तर पीड़ा कौन सी ? जन्म मरण इकसार ।
सतगुरु किसको मान हूँ ? तत्वदर्शी निस्तार ॥104॥

Scanned with Cam

कैसी चाल चलावनी ? अन्तर बाहिर शुद्धार ।
महातीर्थ कल्याण पथ ? अन्तर शुद्ध विचार ॥105॥
उत्तम भूषण कौन जग ? शील विद्या गुणवान ।
चिन्तनीय वस्तु कहा ? ब्रह्म–तत्व भगवान ॥106॥
परम ज्ञान लक्षण कहो ? सम एकता ज्ञान ।
सत्य के लक्षण कहो ? नित एक रस जान ॥107॥
सफल होत क्या सफलता ? सत्य भावना ज्ञान ।
उत्तम गति प्राप्त कहो ? सतसंग शम प्रधान ॥108॥
ईश्वर क्या कर भावना ? विश्व–फल भुगतान ।
कर्मन को प्रेरक कहो ? संस्कार निज जान ॥109॥
पापन का महामूल क्या ? स्वार्थ रत अभिमान ।
स्वार्थ का हेतु कहा ? स्वल्प मति अज्ञान ॥110॥
प्रथम साधन ज्ञान को ? पूर्ण विवेक वैराग ।
क्या स्वरूप वैराग्य को ? भोग लोकादिक त्याग ॥111॥
कारण क्या वैराग को ? दुःख रत शुद्ध विवेक ।
तृतीय साधन ज्ञान को ? शम दमादि षट् एक ॥112॥
कौन जिज्ञासु ज्ञान को ? साधन मुमुक्षु रत जान ।
सो मुमुक्षु क्या करे ? गुरु मुख श्रवण ज्ञान ॥113॥
श्रवण पर क्या साधना ? मनन त्वं तत वेद ।
मनन ज्ञान गम उर धरे ? तत निदिध्यासन भेद ॥114॥
ज्ञान–रहस्य ततसार क्या ? त्वं तत लक्ष्य पिछाण ।
जीव–ईश को लक्ष्य क्या ? चेतन ब्रह्म अबाण ॥115॥

जग में रहिये कौन विधि ? जिभ्या दान्तों बीच।
साधु जग में कौन विधि ? जल में कमल सुसींच ॥116॥
सत संग जग में कौन विधि ? सिन्धु में ज्यों नाव।
तरे संगत में कौन जन ? जिज्ञासु रंक–राव ॥117॥
यह जगत भासत क्यों सदा ? कारण मूल अज्ञान।
भ्रम छेदत क्या पाइये ? हूँ तूँ द्वैत विलान ॥118॥
मानव की शोभा कहा ? धर्म तत्व गुण ज्ञान।
सदा सदन शोभा कहा ? धर्म उत्सव गुण गान ॥119॥
शिखि शोभा कैसे तपे ? यज्ञ भोज आचार।
वाणी शोभा जगत में ? वेद मंत्र शुद्धधार ॥120॥
अलम ज्ञान प्रश्नोत्तर, रतनमला इतिमान।
ज्ञान–गंगा सम सत्य व्रत, जन मन सुख की खान ॥121॥
भक्ति ज्ञान विवेक मय, भ्यानक रुचि यथार्थ।
नीति उपदेश सत उर धरे, पाय परम सुख अर्थ ॥122॥
संवत् युग नभ एक इक, मास मकर शुद्ध बीज।
शशि वासर बारह बजे, रामप्रकाश इति कीज ॥123॥
बल बुद्धि गति ज्ञान गम, अल्प आयु मय कूर।
"रामप्रकाश" की ढीठता, क्षमहुं कवि संत सूर॥124॥
कवि कोविद संत क्षमाकर, बालक धी लख गाज।
बीस वर्ष की आयु तन, क्या जानु कवि काज ॥125॥
उभय शतक प्रश्न भने, युगल उत्तर शत आन।
रत्नमाल दोहा कहै, रामप्रकाश पहिचान ॥126॥

Scanned with Cam

संक्षिप्त ज्ञान प्रश्नोत्तरी, रहस्य ज्ञान अनुराग ।
"रामप्रकाश" विवेक बल, सज्जन पहने जाग ॥127॥
रत्नमाल चिंतामणि, इति वृत माला शान्ति ।
उत्तम "रामप्रकाश" अब, ताप पाप सब शान्ति ॥128॥

इति श्री रत्नमाल चिंतामणि का तृतीय–प्रश्नोत्तर–दोहा–
विष्णुमाला अंक प्रकाश समाप्त ।

●•●

शिक्षावली–चतुर्थमाला

दोहा–छन्द

उत्तम गुरु संत वेद को, रामप्रकाश प्रणाम ।
शिक्षा गुरु गम ज्ञान से, मिले परम विश्राम ॥1॥
"उत्तमराम" गुरु देवजी, ब्रह्मवेता निरवान ।
"रामप्रकाश" तत्वज्ञ बने, ले शिक्षा गुरु ज्ञान ॥2॥
उत्तम शिक्षा वेद की, नीति ज्ञान रस भेव ।
उत्तम जन धारण करे, उत्तम जन हो देव ॥3॥
"रामप्रकाश" सतयुग में, शिक्षा दिक्षा दोय ।
शस्त्र शास्त्र के भेद को, लखे गुरु गम कोय ॥4॥
करो भला जग हो भला, जीवन सुखी कल्यान ।
भलो नहीं सो करो नहीं, उत्तम शिक्षा मान ॥5॥
करो स्तुति ब्रह्म की, करो भ्रम मल नास ।
करो देवन की वन्दना, करो विद्या प्रकाश ॥6॥

Scanned with Cam

करो दान श्रद्धा प्रति, करो तपस्या ताप ।
करो प्रीति सतसंग नित, करो नाम हरि जाप ।।7।।
करो वेद अध्ययन सदा, करो श्रुति अवलोक ।
करो वेदाँग का पठन शुभ, करो शुभ लोक परलोक ।।8।।
करो न कार्य दुष्ट कब, करो न खल संग वैर ।
करो न मैत्री दुष्ट से, करो सदा सब खैर ।।9।।
करो सेवा सब जीव की, करो भलो शुभ ज्ञान ।
करो अन्न जल दान नित, करो न कभी अभिमान ।।10।।
करो ग्रन्थ रचना शुभा, करो आवर्ण ही हान।
करो शब्द शुभ बोल के, करो ज्ञान सम्मान ।।11।।
करो न नशा अफीम का, करो तम्बाकू त्याग ।
करो दारु से रूठना, करो चलन शुभ माग ।।12।।
करो न चरस चण्डू नशा, करो न गाँजा भंग ।
करो नशा सब त्याग वर, करो संत सुभ संग ।।13।।
करो न व्यशन कोई भी, करो सदा शुभ काम ।
करो नियम जप तप सदा, करो काम सुख धाम ।।14।।
करो अहिंसा व्रत को, करो क्षमा संग पाल ।
करो दया व्रत उर धरो, करो सत्य व्रत वाल ।।15।।
करो न चोरी काहू की, करो शील व्रत अंग ।
करो तृष्णा का त्याग नित, करो संतोष प्रसंग ।।16।।
करो न ममता संग्रह की, करो शौच सद् प्रेम ।
करो अहंता को त्याग ही, करो सत्य व्रत नेम ।।17।।

Scanned with Cam

करो तितिक्षा सहन सब, करो ग्रन्थ अवलोक ।
करो भजन प्रभु का सदा, करो हर्ष तज शोक ॥18॥
करो भक्ति नवधा सदा, करो सत्यासत्य छान ।
करो विषय-वैराग्य उर, करो ब्रह्मात्म ज्ञान ॥19॥
करो मन-निग्रह सदा, करो इन्द्रिय दम सोय ।
करो श्रद्धा गुरु वाक्य में, करो क्षमा संग जोय ॥20॥
करो कायरता त्याग नित, करो साहस बन वीर ।
करो दया सब जीव पर, करो व्रत महाधीर ॥21॥
करो सरल अन्तःकरण, करो स्वार्थ परित्याग ।
करो दम्भ से हीन मन, करो अमानी जाग ॥22॥
करो निन्दा का त्याग जो, करो झूंठ परिहार ।
करो चपलता त्याग को, करो शुभ काम व्यवहार ॥23॥
करो सदा निष्कपटता, करो विनय उर धार ।
करो सात्विकता हृदय में, करो तमोगुण टार ॥24॥
करो धैर्य की धारणा, करो जाप नित चंग ।
करो सेवा में प्रीति नित, करो सदा सतसंग ॥25॥
करो ध्यान इष्ट देव को, करो मित्र सब जोय ।
करो दान निष्काम से, करो निर्भय मन सोय ॥26॥
करो न किससे वैर कब, करो सदा सम्मान ।
करो न कभी अहंकार को, करो न उर अभिमान ॥27॥
करो ज्ञान-भक्ति सदा, करो कर्तव्य धार ।
करो काम शुभ जगत में, करो सदा उपकार ॥28॥

Scanned with Cam

करो शांति सुख मन सदा, करो तीर्थ शुभ गंग ।
करो कर्तव्य सुभ, सदा, करो हरि रस रंग ॥29॥
करो न झगड़ा जगत में, करो भक्ति गुरुदेव ।
करो दया जीव जन्तु पर, करो वृद्धन की सेब ॥30॥
करो न गुरु से रूठना, करो न गुरु की निन्द ।
करो नाम नित जप हरि, करो सदा गुरु वन्द ॥31॥
करो बुद्धि वर्द्धन सदा, करो उपाय हमेश ।
करो पुरुषार्थ हिम्मत से, करो प्रेम नित देश॥32॥
करो दृष्टि सम ईश वत, करो मोह को नाश ।
करो सदा शुभ सोच को, करो शुभ चिंता राश ॥33॥
करो त्याग परनारि को, करो संग्रह शुभ रंग ।
करो त्याग परधन सदा, करो न कपट परसंग ॥34॥
करो सदा वाणी शुचि, करो निर्मल तन जोय ।
करो पाप बिन मनन चित, करो खर्च शुभ कोय ॥35॥
करो आदर गृह–नारि को, करो बीड़ी परित्याग ।
करो न हिंसा–यारि को, करो दोष दश त्याग ॥36॥
करो धर्म पालन सदा, करो व्यशन को दूर ।
करो मार मद वश सदा, करो दमन मन शूर ॥37॥
करो तंत्र शुभ अर्थ ले, करो मंत्र शुभ जान ।
करो जंत्र शुभ जान कर, करो शास्त्रार्थ ज्ञान ॥38॥
करो न शंका सेव में, करो न गर्व महान ।
करो नियम नित पूर से, करो न आलस दान ॥39॥

Scanned with Cam

करो मूर्खता दूर नित, करो स्वरूप संभाल ।
करो अविद्या दूर उर, करो भविष्य पाल ॥40॥
करो न संतन की हंसी, करो न रण में पूठ ।
करो वर लक्षण को नमो, करो न्याय मत झूँठ ॥41॥
करो न प्रातः शयन को, करो न मन की मान ।
करो न नीची संगत को, करो जल पान सु छान ॥42॥
करो न वाद विवाद छल, करो न कविता झूँठ ।
करो न लज्जा धर्म में, करो न निन्दा लूट ॥43॥
करो न लाजे ज्ञान गुरु, करो न विष–व्यवहार ।
करो न आन भरोस को, करो प्रीति घर नार ॥44॥
करो जीवन सादा सदा, करो परस्पर प्रेम ।
करो सहायता दीन की, करो न यारी क्षेम ॥45॥
करो न अपनी ओपमा, करो दगा मत कोय ।
करो व्यर्थ कछु खर्च मत, करो ठगी मत जोय ॥46॥
करो पुरुषार्थ साच की, करो न प्रेम उधार ।
करो ज्ञान की आश नित, करो न उर अहंकार ॥47॥
करो नित्य गौ सेव जु, करो न राज पुकारि ।
करो राष्ट्र हित कर्म सब, करो न चोरी यारि ॥48॥
करो श्रवण शुभ ज्ञान को, करो न हंसी अवारि ।
करो वास वर बस्ती में, करो न्याय शुभ धारि ॥49॥
करो न दम्भ पाखण्डता, करो न मान गुमान ।
करो विद्या अध्ययन सदा, करो न मूर्ख मान ॥50॥

Scanned with Cam

करो ओम जप स्वास में, करो पाप क्षय देख ।
करो न गुण बिन पूजनो, करो कृतज्ञ रेख ॥51॥
करो भ्रम भय भेद क्षय, करो ज्ञान व्यवहार ।
करो खण्डन पाखण्ड का, करो वैदिक आचार ॥52॥
करो भलाई जगत में, करो न मांस अहार ।
करो संग सत पुरुषन का, करो न मोह पसार ॥53॥
करो न मिथ्या काम का, करो न वाद लबार ।
करो न घृणा दीन से, करो निर्बल की सार ॥54॥
करो न नदी तैरणों, करो न शैल चढाय ।
करो न कोई जामिनी, करो न राष्ट्र खसाय ॥55॥
करो न सिंह जगावनो, करो न विषधर छेड़ ।
करो न शठ को संग भी, करो न गोचर खेड़ ॥56॥
करो नकल किस की नहीं, करो अकल के काम ।
करो न परिश्रम अनर्थ को, करो जगत में नाम ॥57॥
करो श्रवण हरि कथा को, करो न चाल कुचाल ।
करो सदा उपदेश शुभ, करो धर्म प्रतिपाल॥58॥
करो मोक्ष की साधना, करो जीव ब्रह्म ज्ञान ।
करो ज्ञान की साधना, करो एक ब्रह्म ध्यान ॥59॥
करो भक्ति-उद्योग व[illegible], करो योग उपवास ।
करो इष्ट-बल साधना, करो अविद्या नास ॥60॥
करो पाठ शुभ शास्त्र को, करो दूर अज्ञान ।
करो वैदिक धर्म धारणा, करो जीवन कल्यान ॥61॥

Scanned with Cam

भलो राम को भजन है, भलो ज्ञान गुरु पास ।
भलो संगत शुभ जीवनो, भलो न संशय फांस ॥62॥
भलो कुसंग से मरण है, भलो न दुष्ट विकास ।
भलो मित्र को जीवनो, भलो रवि प्रकाश ॥63॥
भलो दुष्ट को मरण है, भलो हरि हर देव ।
भलो न माया मोह रति, भलो वृद्ध गुरु सेव ॥64॥
भलो अविद्या जाल है, भलो न द्वैत विकार ।
भलो न दीन सतावनो, भलो न मद अहंकार ॥65॥
भलो न संत दुखावनो, भलो दुष्ट मुख मौन ।
भलो न धर्म उडावनो, भलो गृह में हौन ॥66॥
भलो न मन्दिर उठावनो, भलो धर्म, शम, ध्यान।
भलो दया को काम है, भलो दान, दम, ज्ञान ॥67॥
भलो वेद अंग अध्ययन है, भलो सदा सुविचार ।
भलो संत गुरु सेवनो, भलो सु कर व्यवहार ॥68॥
भलो ज्ञान व्यवहार को, भलो सु पर उपकार ।
भलो न द्वैष बढावनो, भलो मित्र व्यवहार ॥69॥
भलो न कपट कमावनो, भलो नाम हरि नाम ।
भलो देश हित काम सब, भलो ज्ञान निष्काम ॥70॥
भलो सज्जन उपदेश दे, भलो एकान्त निवास ।
भलो शाम, दम, दान है, भलो नीति रति खास ॥71॥
भलो विद्या धन सर्व से, भलो न वाद विवाद ।
भलो मौन सुख ज्ञान निज, भलो गुरु संवाद ॥72॥

Scanned with Cam

भलो न जर्दा चिलम है, भलो न वैश्या संग।
भलो न दोष कमावनो, भलो न व्यशन भंग ॥73॥
भलो न चोरी कर्म है, भलो न मद्य विहार।
भलो न भक्षण मांस को, भलो न जीव शिकार ॥74॥
भलो न जंगल वास है, भलो प्रेम विस्तार।
भलो निर्भय को विचरनो, भलो मरण निस्तार ॥75॥
भलो नम्र अंग सरलता, भलो न रञ्चक रोग।
भलो न ऋण रंच दाम को, भलो तितिक्षा भोग ॥76॥
भलो न राड़ बढावनो, भलो शान्ति को वास।
भलो न साधन भूतको, भलो न परवश वास ॥77॥
भलो खान कर पान शुद्ध, भलो करो जप ध्यान।
भलो न दान्त दिखाईबो, भलो यज्ञ, दम दान ॥78॥
भलो दुःख प्रभु नाम युत, भलो न सुख द्वंद जोय।
भलो ब्रह्मानन्द साधनो, भलो सज्जन संग सोय ॥79॥
भलो न अड़बो भाण्ड से, भलो चित निष्काम।
भलो न लड़नो राण्ड से, भलो नाम श्री राम ॥80॥
भलो न छूआछुत है, भलो साधु शुचि संग।
भलो संगठन प्रेम है भलो निष्कर्म निसंग ॥81॥
भलो सुपातर में दियों, भलो न पश्चाताप।
भलो एक कण पुण्य को, भलो न रति भर पाप ॥82॥
भलो गम धारण किये, भलो न मद मन–मार।
भलो न अति सब काहू में, भलो न रञ्च विकार ॥83॥

Scanned with Cam

भलो न रञ्चक अग्नि कण, भलो न साँचो बोल ।
भलो न मूर्ख को दियो, भलो न राखण पोल ॥84॥
भलो तीर्थ तन माहि है, भलो क्षमा संतोष ।
भलो सत्य पालन सदा, भलो न रञ्चक रोष ॥85॥
भलो वाक्य सत मृदु हो, भलो ओम को नाम ।
भलो भलाई ना तजे, भलो करे भल काम ॥86॥
भलो श्रद्धा विश्वास है, भलो साधन सुविचार ।
भलो मोक्ष पद पावनो, भलो न नर्क दुबार ॥87॥
भलो काम करनो सदा, भलो दुष्ट संग नाहि ।
भालो न संत निंदा करे, भलो दर्शन नित जाहि ॥88॥
भलो सर्व को कीजिये, भलो न व्यशनी संग ।
भलो न अधिकी हंसनो, भलो सदा सतसंग ॥89॥
भलो न परधन हरण है, भलो न संग परनार ।
भलो न जामिन होवनो, भलो न झूँठ विकार ॥90॥
भलो है मन को जीतनो, भलो सु नित्याचार ।
भलो संयम गण इन्द्रिय को, भलो नहिं व्यभिचार ॥91॥
भलो काव्य सद्‌गुण शिक्षा, भलो भक्ति वैराग ।
भलो ज्ञान ब्रह्मात्मा, भलो सज्जन बड़भाग ॥92॥
भलो सूम दरिद्री सदा, भलो दाता धनवान ।
भलो धन संतोष है, भलो सोई दे मान ॥93॥
भलो परीक्षा चरित्र से, भलो न रिश्वत लेत ।
भलो देश भारत सदा, भलो सदा शुभ देत ॥94॥

Scanned with Cam

भलो भक्त अवतार है, भलो मरण दुष्ट जान।
भलो हरि संत पूजनो, भलो न आन अज्ञान ॥95॥
भलो न पाखण्ड पूजनो, भलो न पाखण्ड मूर।
भलो न संत कहावनो, भलो न संशय कूर ॥96॥
भलो संत गुण शील व्रत, भलो न लक्ष असंत।
भलो व्यशन को त्यागनो, भलो निरदोष महंत ॥97॥
भलो दोष को त्यागनो भलो न त्रिगुण ताप।
भलो न एषणा तीन को, भलो न लोभ अलाप ॥98॥
भलो न काम रु क्रोध है, भलो न मोह लिगार।
भलो प्रेम सत भक्ति है, भलो वैराग विचार ॥99॥
भलो शरीर निरोग है, भलो गुरु–संत देव।
भलो पुत्र गुणवान निज, भलो होय कर सेव ॥100॥
भलो ग्रन्थ पढनो सदा, भलो समय मत चूक।
भलो ग्रन्थ रचनो सदा, भलो जनम मत हूक ॥101॥
भलो करो उपदेश नित, भलो चल पद जोय।
भलो न ताश तमाश है, भलो न व्यशन कोय ॥102॥
भलो भोजन सात्विक सदा, भलो सत्य व्यवहार।
भलो संत प्रणाम है, भलो आचार विचार ॥103॥
भलो न बड़ो कहावनो, भलो न भूल–निकाम।
भलो न दुंर्जन संग है, भलो एकांत अकाम ॥104॥
भलो मिंत परदेश में , भलो देश में जान।

Scanned with Cam

भलो सर्व गुण ग्रहण है, भलो सर्व सन्मान ।।105।।
भलो विद्या यश पाठ तप, भलो सुमति गुणरूप ।
भलो न भ्रम को जीवनो, भलो ज्ञान स्वरूप ।।106।।
भलो न मरणो जन्म है, भलो न ताप त्रिताप ।
भलो राम जप ओम को, भलो सु सोहं जाप ।।107।।
भलो संत उपदेश लो, भलो धरे चित माहि ।
भलो सत्य आचरण कर, भलो जगत में नाहि ।।108।।
भलो न विषय जंजाल है, भलो अकिञ्चन नूर ।
भलो पांच प्रपंच ना, भलो न त्रिगुण तूर ।।109।।
भलो समष्ठी व्यष्ठि ना, भलो न द्वैष पसार ।
भलो जीवनपन त्यागनो, भलो अचल दीदार ।।110।।
भलो ज्ञान अद्वैत को, भलो न हुं तू और ।
भलो न अविद्या जाल है, भलो न करणो सौर ।।111।।
भलो राज्य शुभ नीति को, भलो न बूठो जेंठ ।
भलो न गुरु बेमुख सदा, भलो न तूठो सेठ ।।112।।
भलो अनीति काम ना, भलो सुनीति काज ।
भलो होय गुरु महर से, भलो राम महाराज ।।113।।
भलो सु ज्ञान विज्ञान है, भलो नहीं अज्ञान ।
भलो माता को पूजनो, भलो पिता सम्मान ।114।।
भलो आचार्य देव है, भलो गुरु कुल वास ।
भलो धर्म वैदिक कहै, भलो सनातन खास ।।115।।

Scanned with Cam

भलो भिक्षा अन्न फक्कर को, भलो न पाखण्ड द्वंद ।
भलो न मुख से मांगबो, भलो भूख आनन्द ॥116॥
भलो भरोसो भाग्य को, भलो पुरुषार्थ प्रेम ।
भलो सनातन धर्म है, भलो कुशल सुख नेम ॥117॥
भलो सुपात्र में दीयो, भलो अन्न पट दान ।
भलो विद्या धन जगत में, भलो उद्यम मिंत मान ॥118॥
भलो न सांग बनावनो, भलो न ईर्षा दम्भ ।
भलो साच तप तापनो, भलो पर्व शुभ कुम्भ ॥119॥
भलो देव घर थापनो, भलो मानसिक सार ।
भलो अध्यात्म पाठ है, भलो सुमिरण मन धार ॥120॥
करो शब्द शत युग शिक्षा, करो–करो ना ज्ञान ।
भलो शब्द शत युग दिक्षा, भलो–भलो ना मान ॥121॥
भलो करो इस जगत में, बुरी करो मत भूल ।
"रामप्रकाश" संत सीख यह, वेद नीति अनुकूल ॥122॥
धर्म भावना उर धरो, करो भलो शुभ काम ।
"रामप्रकाश" शिक्षा कहै, वेद तंत ऋतु नाम ॥123॥
दो सौ चौबीस क ो. शब्द भिक्षा मय शुभसार ।
दो सौ बतीस भलो ाव, दिक्षा मय उर धार ॥124॥
रत्नमाल चिंतामणि, चतुर्थ अंक प्रकाश ।
चतुर्थ माला इति श्री, शिक्षा दीक्षा खास ॥125॥

Scanned with Cam

मति गति अति बाल हूँ, कवि चतुर नहीं धीर।
"रामप्रकाश" आयु लघु, कोविद लखे गंभीर ॥126॥
संवत्–श्रवण नभ नाक गुण, द्वीप मास ऋतु वार।
तिथि पुर्णिमा शुभ कहीं, राम प्रकाश विचार ॥127॥
शान्ति शान्ति इति शान्ति श्री, रामप्रकाश चित शान्ति।
रुत्नमाल सत शान्ति शुभ, पूरण ब्रह्म सुख शान्ति ॥128॥

इति श्री रत्नमाल–चिंतामणि का चतुर्थ–प्रश्नोत्तर–दोहा–
विष्णुमाला अंक प्रकाश समाप्त

•••

ब्रह्मनिष्ठ श्री स्वामी विशुद्धानन्दजी महाराज कृत

उपदेश माला

दोहा– विशुद्धानन्द स प्रेम से भजत रहो भगवान।
मनुष्य जन्म की मौज है, करो अपना कल्यान ॥1॥
विशुद्धानन्द सु प्रेम से, जपो अजपा जाप।
आपा खोजो आपका, पावो आपो आप ॥2॥

ईश्वर जैसा देवा नाही, प्रेम जैसी सेवा नाही।
भात–पिता सा पालक नाही, सेवक जैसा बालक नाहीं ॥3॥
अभेद जैसा ज्ञान नाही, भेद सा अज्ञान नाहीं।
संतोष जैसा सुख नाही, लोभ जैसा दुःख नाही ॥4॥
कपट जैसा काला नाही, शुद्ध मन जैसी माला नाही।

Scanned with Cam

सेवा जैसी भक्ति नाही, विद्या जैसी शक्ति नाही ।।5।।
तृष्णा जैसा रोग नाही, शम दम जैसा योग नाही ।
मृत्यु जैसा भय नाही, अमर जैसा अभय नाही ।।6।।
कर्मों जैसी हुण्डी नाही, भूख जैसी भूण्डी नाही ।
अज्ञान जैसा अँधेरा नाही, ज्ञान जैसा उजेरा नाही ।।7।।
जारी जैसा अवगुण नाहीं, निजारी जैसा सगुण नाही ।
पैसे जैसा प्यारा नाहीं, गाली जैसा खारा नाही ।।8।।
कायर जैसा कपूत नाही, सूरे जैसा सपूत नाही ।
मांगण जैसा छोटा नाहीं, दानी जैसा मोटा नाहीं।।9।।
अकल जैसी सोजी नाही, खेती जैसी रोजी नाही ।
मानुष जैसी योनी नाही, कुदर त जैसी होनी नाही ।।10।।
निन्दा जैसा नरक नाहीं, शोभा जैसा स्वर्ग नाही ।
ओम जैसा जाप नाही, अभिमान जैसा पाप नाही ।।11।।
मोह जैसी जँजीर नाही, विवेक जैसा वजीर नाही ।
आशा जैसी नीच नाही, पराधीन जैसी मीच नाही ।।12।।
सज्जनों से मन मोड़ो नाही, दुष्टों से मन जोड़ो नाही ।
बिना सुहाता बोलो नाही, पर के औगुण खोलो नाहीं ।।13।।
दान देकर पछुताजे नाहीं, दुर्जन के घर जाजे नाही ।
अप जस किसी को करिये नाही, इज्जत किसी की हरिये नाही ।।14।।
धनी गुलामी बनिये नाही, जान पराई हरिये नाही ।
अफीम दारु पीजे नाही, परनारी संग कीजे नाही ।।15।

विषय भोग भलो नाही, ईश्वर भक्ति भूलो नाही ।
जहारु के लाज नाहीं, झूँठे का विश्वास नाहीं ॥16॥
विद्या जैसा दान नाहीं, रोटी जैसा सन्मान नाही ।
शुभ गुण जैसा मित्र नाही, अवगुण जैसा शत्रु नाहीं ॥17॥
कुमार्ग में मरिये नाही, शुभमार्ग से डरिये नाही ।
झगड़ा कुश्ती करिये नाही, संतो सेती अड़िये नाही ॥18॥
हाथों महिमा कीजे नाहीं, खोटा पैसा लीजे नाहीं ।
बूढा बींद परणाजे नाहीं, कन्या को धन खाजे नहीं ॥19॥
अपने इष्ट को तजिये नाही, आन इष्ट को भजिये नाही ।
वचन कर बदलीजे नाही, होते उत्तर दीजे नाही ॥20॥
अपनी हिम्मत को हरिये नाही, आस पराई करिये नाही ।
घर आयो को आदर दीजे, श्रद्धा सेती दान दीजे ॥21॥
मूरख सेवा सफल नाही, सज्जन सेवा निष्फल नाही ।
मेनावति जैसी माई नाही, मीरा जैसी बाई नाही ॥22॥
पृथु जैसा राजा नाही, बलि जैसा काज नाहीं ।
श्रवण जैसा पूत नाही, शुकदेव सा अवधूत नाही ॥23॥
रावण जैसी रार नाही, भागीरथ सा आधार नाही ।
अनुसूया जैसी त्रिया नाही, अगस्त जैसी क्रिया नाही ॥24॥
हनुमान जैसा दास नाही, सूरज जैसा प्रकाश नाही ।
चन्द्र जैसा शीत नाही, भरत जैसी प्रीत नाही ॥25॥
राम जैसा रण नाही, भीष्म जैसा प्रण नाही ।

Scanned with Cam

ब्रह्मचर्य जैसा वीर नाही, गंगा जैसा नीर नाही ।।26।।
ब्रह्म जैसा अचल नाही, मन जैसा चंचल नाही ।
दिलीप जैसी दया नाही, शंकर जैसी मया नाही ।।27।।
ध्रुव जैसा हठ नाही, बबरीक जैसा भट नाही ।
दुर्योधन सा अन्याय नाही, विक्रम जैसा न्याय नाही ।।28।।
अन्याय पक्ष लीजे नाही, पैसा कुमार्ग दीजे नाही ।
ईश्वर जैसा दयाल नाही, सतगुरु जैसा दलाल नाही ।।29।।

दोहा– विशुद्धानन्द अमोल भय, सत्ये अठोत्तर बोल ।
परम प्रेम से लीजिये, वचन माला अनमोल ।।30।।
वचन मणके सुमेर दोहा, सूत्र सत्य विवेक ।
विशुद्धानन्द मोक्ष मिले, करे पाठ नित एक ।।31।।

●•●

अथ चौरासी बोल

दोहा

नक्कारो नीरस वचन, नटत हि उपजै दुःख ।
यों चोरासी जाहिगा, नटै तो वरते सुक्ख ।।1।।
मिनख जन्म को पायके, टाले इतना दोक ।
जगन्नाथ नर नारि को, सुधरे लोक–परलोक ।।2।।

Scanned with Cam

राम सुमरतो थकिये नाही, गुरु सेवा में सँकिये नाही।
करणी कर गरबीजे नाही, नितको नियम घटाजे नाही ॥
दान देत अलसाजे नाही, सन्त देख टल जाजे नाही।
लछ विन शीश नमाजे नाही, साचो बात उठाजे नाही।
नीची संगति कीजे नाही, साचों परिहर दीजे नाही।
नृप से बाद बधाजे नाही, ओछो अकल उपाजे नाही।
दया पालतां लजिये नाही, भाग भरोसो तजिये नाही।
आप बडाई कीजे नाही, दान उदक फिर लीजे नाही ॥
दान देय पछिताजे नाही, गुरु को ज्ञान लजाजे नाही।
आन आसरो लीजे नाही, न्याय अदल बिन कीजे नाही ॥
परमार्थ में मुड़जे नाही, ऊझड़ मारग खड़जे नाही।
मन को मान्यो कीजे नाही, दगो किसी को दीजे नाही ॥
दिन आथ्यां से सोजे नाही, शोक भणँते रोजे नाही।
रण में पूठ बताजे नाही, हाथों कूरब घटाजे नहीं ॥
अणछाण्यो जल पीजे नहीं, कुयश किसी को लीजे नाही।
झूँठी कविता करजे नाही, साची कहता डरजे नाही।
झूठी निन्दा कीजे नाही, पर नारी चित दीजे नाही।
घर तजि विषय कमाजे नाही, जहर जाणतां खाजे नाही ॥
काछ विकल मग लीजे नाही, कपटी मित्र कीजै नाही।
सम्पत्ति में ऋण रखजे नाही, धन जोभन में छकजे नाही ॥
राज पुकारां जाजे नाही, बुरी पराई कीजे नाही।

चोरी जारी कीजे नाही, पूठ धणी को दीजे नाही ।।
सूने मन्दिर जाजे नाही, जग में बुरो कहाजे नाही ।
ओछी बस्ती बसजे नाही, तात्पर्य बिन हंसजे नाही ।
चुगल पाड़ोसी कीजे नहीं, धाम परायो लीजे नहीं ।
भरम्या भटका खाजे नाही, अलगा उत्तर जाजे नाही ।।
भांग तम्बाकू खाजे नाही, ऊषर खेती बाजे नाही ।
वेश्या के घर जाजे नाही कुलको दोष लगाजे नाही ।
पर धन काको हरिजे नाही, नीचों संगति करिजे नाही ।
सूतो सिंह जगाजे नाही, चूडेलण बतलाजे नाही ।
हरिकी भक्ति विसरजे नाही, विकर्म कबहू करजे नाही ।
वाद विवादू ह्वै जे नाही, हलकी वाणी कहजे नाही ।
झूठी हामल भरजे नाही, वचन काढके फिरजे नाही ।
रांड भांड से अड़जे नाही, गतराड़े से लड़जे नाही ।
नदी बहाला तिरजे नाही, डूंगर सेती गिरजे नाही ।
सूणी बात फैला जे नाही, अनजान्यो फल खाजे नाही ।
सुलज्यां को उलजाजे नाही, निर्धनको डरपाजे नाही ।
अपयश कानां सुणजे नाही, चच्चो मम्मो भणजे नाही ।
जामन किसके हुईजे नाही , अरि से गाफिल रहिजे नाही ।
झूठो दोषण दीजे नाही, निर्बल शरणो लीजे नाही ।
मूर्ख को बतलाजे नाही, धन बिन अर्थ गमाजे नाही ।
लेतां देतां लजिये नाही, भल माणस को तजिये नाही ।।21/84।।

Scanned with Cam

दोहा– यह चौरासी शुभ अशुभ, कही ठामकी ठाम।
जगन्नाथ करिये सबै, जब लग गृह विश्राम ।।3।।
इण चलगत चालै सुधर, भला कहै सब लोय।
निश्चय या वा लोक में, फला न पकड़ै कोय ।।4।।
यह चौरासी चित धरै, वह चौरासी बाद।
अपनी अपने हाथ है, मन माने सो साध ।।5।।
बार बार नर तन नहीं, कहै शास्त्र अरू सन्त
ताते सुकृत कीजिये, के भजिये भगवन्त ।।6।।
जैन, यवन, शिवधर्म कहै, करणी सुधरे काम।
दया धर्म इकतार से, जगन्नाथ कहि राम ।।7।। इति।।

पहले जनक के तपस्वी हुते,
खड़े रहे इक टँग।
उन्हीं दिनों के थके हुए,
अभी दबावत अंग।।

२१/७/१८

Scanned with Cam

संत उपदेशामृत

मन गयन्द बलवन्त, तासु के अंग दिखाऊँ।
काम क्रोध अरु लाभ मोह, चारौ चरण सुनाऊँ।।
मद–मत्सर ह शीश, सूँड तृष्णा सु डुलावे।
द्वन्द दशन है प्रकट, कल्पना कान हलावे।।
दुविधा दृग देखत सदा, पूँछ पृकृति पीछे फिरे।
"सुन्दर" अँकुश ज्ञान के, पीलवान गुरु वश करे।।1।।

बात करामात

बातन से देव अरु, देवता प्रसन्न होत।
बातन से सिद्ध साध–पति कहलात है।।
बातन से भूत औ भुजंग सब वशि होत।
बातन से पाप अरु, पुण्य बढि जात है।।
बातन से खान सुल–तान औ नरेश माने।
बातन से स्याने लोग, लाख को कमात है।।
कीरति अकीरति सु, होत सब बातन से।
मनुष्य के गात में को, बात करामात है।।2।।

Scanned with Cam

श्री उत्तम गुर स्तुति–कुण्डलिया छन्द

(1)

सतगुरु आये जगत में, धार नित्य अवतार ।
निर्गुण ते सर्गुण बने, श्री रामानन्द निस्तार ।।
श्री रामानन्द निस्तार, राघव गद्दी अनूप है ।
भक्त जिज्ञासु तारण हित, अघहरण गुण रूप है ।।
विशिष्टाऽद्वैत मत प्रकट करि, विषमभाव सब दूर करु ।
''रामप्रकाश'' गुरु प्रणालि में, नमों नमी सब सतगुरु ।।

(2)

'उ'दय भाग हो पूर्व के 'रा'म नाम में प्रीत ।
'त'र रहै वृत्ति ज्ञान मय, 'म'द मत्सर को जीत ।।
'म'द मत्सर को जीत, 'प्र'साद गुरु की पावे ।
'रा'जत संतन संग में, 'का'या विगत लखावे ।।
'म'नन करे भय पर हरे, 'श'मन होय सब राग ।
उत्तम राम प्रकाश को, पावे जु उदय भाग ।।

(3)

सतगुरु उत्तमरामजी, स्वामी दीन दयाल ।
ज्ञानी ध्यानी गुण मयी, मुक्ति रूप कृपाल ।
मुक्ति रूप कृपाल, दया कर युक्ति दिखावे ।
निर्गुण सर्गुण है वही, परम देह धरि आवे ।
उपकारी चेतन मयी, उत्तम वपु को ध्यार उर ।
'रामप्रकाश' नित ही नमो, अन्नतकोटिश्री सतगुरु।।

Scanned with Cam

मानव जीवनोपयोगी ज्ञानवर्द्धक

उत्तम साहित्य-प्रकाशन सूची

- आचार्य सुबोध चरितामृत (सचित्र) सम्प्रदाय शोधग्रन्थ
- सन्तदास अनुभव विलास (गुरु स्मृति पाठ)
- हरिसागर (समस्त ज्ञानों का भण्डार)
- वाणी प्रकाश (छः महात्माओं की अनुभव वाणी)
- अचलराम भजन प्रकाश (तीन साईज में-बड़ा, मध्यम, लघु)
- उत्तमराम भजन प्रकाश (स्वामी उत्तमरामजी कृत)
- अवधूत ज्ञान चिन्तामणि (स्वामी उत्तमरामजी कृत)
- भारतीय समाज दर्शन (समाज का उत्थान एवं पतन)
- विश्वकर्मा कला दर्शन (तीन भाग एक जिल्द में)
- नशा खण्डन दर्पण (छब्बीस नशों का विवरण)
- रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह (सिद्ध संतों की २२ रामरक्षा का संग्रह)
- रामायण मन्त्र उपासना
- पिङ्गल रहस्य (छन्द विवेचन, षोडस अंग सहित)
- उत्तम बाल ज्योतिष दोहावलि (मूल ७५० दोहा)
- उत्तम बाल ज्योतिष दोहावली (सरल टीका सहित ८०४ दोहा)
- रामप्रकाश शब्दावली (सचित्र) दो भाग
- उत्तमराम अनुभव प्रकाश (३२१ भजन)
- रामप्रकाश शब्द सुधाकर (सचित्र) दो भाग
- गूढ़ार्थ भजन मञ्जरी
- अपूर्व एक लाख वर्षीय कैलेण्डर
- रत्नमाल चिन्तामणि (प्रथम भाग)
- उत्तम बाल योग रत्नावलि (तीन भाग) (स्वर, ज्योतिष, भजन)
- सन्ध्या विज्ञान

Scanned with Cam

- सुगम चिकित्सा – प्रथम भाग (५७ विषय रोगों पर २१५० नुसके)
- सुगम चिकित्सा – द्वितीय भाग (५७ विषय रोगों पर २१५० नुसके)
- सुगम उपचार दर्शन (देवीदान औषधि कल्पतरु)
- तिलक प्रबोध दर्शन (तीन भाग) (तिलक, जाति दर्शन)
- उत्तमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका
- सुखराम दर्पण अर्थात् उत्तम वाणी प्रकाश (टीका सहित)
- आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द कोष (परिशिष्ट भाग)
- स्वाध्याय वेदान्त दर्शन (पाँच ग्रंथों का मूल संग्रह)
- वेदान्त भूषण वैराग्य दर्शन (तीन ग्रंथों का मूल पद्यात्मक संग्रह)
- दैनिक चिन्तन दैनन्दिनी
- रामप्रकाश भजन प्रभाकर (५५० भजन, छन्दादि)
- हिन्दू धर्म रहस्य
- कामधेनु (गोवंश संबंधित संपूर्ण तथ्यात्मक विश्लेषण)
- सर्वदर्शन वाद कोश (विभिन्न १५६ वादों का विवरण)
- अचलराम ग्रन्थावली (1-2 भाग टीका सहित)

अन्य उपयोगी पुस्तकें

- नवलाराम भजन विलास
- रामदेव ब्रह्म पुराण
- अत्येष्टि संस्कार (शव यात्रा)
- सत्यवादी वीर तेजपाल
- गर्भ गीता
- नित्य पाठ - नव स्तोत्र
- रामदेव गप्प दर्शन
- उमाराम अनुभव प्रकाश
- गोरख बोध वाणी संग्रह
- शान्ति भजन प्रदीपिका

✦✦✦

Scanned with Cam

Bhagwati Interior Solutions

(Mfg. all types of Modular furniture, Turnkey Contracor & All ply. WPC Sheet supply)

प्रकाशनकर्ता

हुकमाराम दुर्गाराम सुथार (जोपिंग)
मोबाइल - 9890877770
गांव का पता - झाबरा, तहसील-पोकरण
जैसलमेर-345024 (राजस्थान)
पूना का पता - भगवती निवास, दत्तनगर,
आंबेगांव, पूणे-46

अचलाराम दुर्गाराम सुथार
मोबाइल - 9420079104
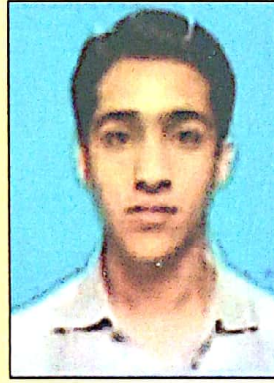
Dr. दीपक हुकमाराम सुथार
(Dr. of Pharmacy)
मोबाइल - 9561584468
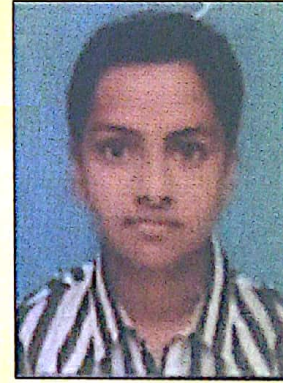
Ar. गणेश हुकमाराम सुथार
(B. Arch)
मोबाइल - 9822831963

Vishwakarma Kala Enterprises

(Mfg. all types of SS Works)

पदमाराम गुमानाराम सुथार (पाखरवढ)
मोबाइल - 9823295373

गांव का पता - सोमेसर, तहसील-शेरगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
पूणे का पता - चामुण्डा अपार्टमेंट, दत्तनगर, आंबेगांव, पूणे-46

Scanned with Cam

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) का जीवनोपयोगी सत्साहित्य

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-342006 फोन : 0291-2547024

मो. 94144 18155

E-mail: uttamashram@gmail.com

Scanned with Cam